वर्ष 27 अंक 10 अक्तूबर - 2025 ₹ 3

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 26 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

दंडी नायनार अतुल, बने रहे थे सबल।
आँखों की रोशनी पा, बन गए अति प्रबल ॥

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 27, अंक 10 | मूल्य ₹ 3/- | अक्तूबर - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : 9842765414

Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
अर्यमा 7
अर्हम 8
प्रसन्न रहने का मूल मन्त्र 10
बने रहो पगला, काम करेगा अगला 12
अतिथि सावित्री बाई 14
रुपया माया है.................... 15
नारी शक्ति 16
जीवन पथ में संगी साथी... 17
रिक्तता 18
भगवान 18
हे शिक्षक – शत-शत नमन आपको 19
भीषण बाढ़ विभीषिका... !.......... 19
देवी दुर्गा भवानी 20
ग़ज़ल 20
किताबों का जान जो सिखलाते हैं 21
जगमग दीवाली 22
करूँ निवेदन 22
हिन्दी, भारती के माथे की बिंदी .. 23
रामत्ववाणी 24
मुझे क्षमा करें 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
आधार छंद – विधाता 30
जोकर 30
तिलक भोले को 31
संत का अवतार गुरुजी 31
दो कविताएँ....................... 32
मेरी कविता रोटियाँ नहीं दे सकती 33
ॐ की महिमा, ॐ के लाभ 34
पीपल की छाँव 34
आओ ! दीप जलाएँ............. 35
परिवार........................... 35
राजनीति और अंतरात्मा.......... 36
मिलन के हम गीत गाते रहेंगे ।। .. 36
मैंने भी मोल खरीदे आँसू 37
त्योहार........................... 37
''लौहपुरुष'' अखंड भारत के शिल्पी 38
तुम और मैं प्रिये 39
मेरे आँगन का फूल 39
संवेदना सूखे पत्तों की 40
पाठकों के पत्र 40
आगे बढ़े 41
नवांकुर 42
पठितौ, अभिरुचितौ, अनूदितौ ... 44
தமிழமுது 45
அருள் உலா 46

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
அக்டோபர்-2025	12-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	25-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.
★ D.D. *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ ***संपादक की कलम से ...***

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

तमिलनाडु के करूर शहर में भीड़भाड़ में फंसकर लगभग 40 लोगों की मृत्यु हो चुकी है । बहुत दुख की बात है कि इसमें नर-नारी के अलावा कुछ बच्चों की भी अकाल मृत्यु हो चुकी है । एक सुप्रसिद्ध नायक को देखने और उसकी बात सुनने की इच्छा में जहाँ पंद्रह हज़ार लोग रह सकते हैं वहाँ पचास हज़ार लोगों के आने के कारण यह दुर्घटना संभावित हो चुकी है । दिल को टुकड़-टुकड़े में कर देनेवाली यह घटना अनेकों परिवारों में अमिट दुख भरकर गई है । बेंगलुरु में क्रिकेट के विजयोत्सव में इस प्रकार की एक घटना पहले भी हो चुकी है ।

इस घटना की जिम्मेदारी शायद राज्य सरकार की हो सकती है या जिसने इस कार्यक्रम की आयोजन की उसकी हो सकती है । हम यहाँ किसी को दोषी ठहरानेवाले नहीं हैं । इस दुनिया में मानव का जीवन बहुत ही बहुमूल्य है । जनता की जान इस प्रकार गँवाना अनुचित है । भविष्य में ऐसी घटनाएँ बिलकुल होनी नहीं चाहिए ।

जनता को अपनी रुचि या पागलपन पर अधिक महत्व न देकर अपनी जान बचाने में जो कार्य करना है उसी को करना चाहिए । बड़ी भीड़ में जहाँ अपनी मौजूदगी जरूरत नहीं है वहाँ अपने बच्चों को ले जाने की जरूरत ही क्या है ? अपनी जान के महत्व को जानकर अपनी रक्षा पर हर किसी को ध्यान रखना चाहिए । हर जीव जो इस दुनिया में जन्म लेता है उसे संपूर्ण रूप से जी कर अपनी जान छोड़ना चाहिए । भगवान इस घटना में धरती से गई हर आत्मा को शांति प्रदान करें । परिवार को संपूर्ण शक्ति प्रदान करें । भविष्य में ऐसी कोई घटना को स्थान ही ना मिले ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

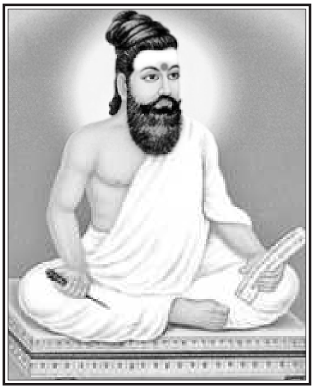

अनमोल वचन

उसके अंग की मृदुलता

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – कृष्ण–नील फूल तू तो बहुत ही नरम हो । तुम धन्य हो । लेकिन मेरी प्रेमिका तुमसे भी कई गुना नरम है ।

हे मेरा मन ! मुझसे सिर्फ मुझसे देखे जानेवाली मेरी पत्नी की आँखें, अनेकों से देखे जानेवाले फूल सा लगने के कारण फूलों को देखकर तुम क्यों मदमस्त हो जाते हो ?

बाँस के जैसे बाहेंवाली मेरी पत्नी का शरीर कोंपल है, दाँत मोती हैं और शरीर का गंध ही सुगंध है, सुरमा से भरी आँखें भाला के समान है ।

अगर कमल के फूल देख पाते तो मेरी प्रेमिका की आँखों की सुंदरता देखकर उसके सामने अपने आपको कांतिहीन महसूस कर धरती को देखने लगेंगे ।

सूँघते ही मुरझाये जानेवाले मृदुल अनिच्चम फूल को उसके तने को निकाले बिना अपने सिर पर लगा लेने से मेरी प्यारी मृदुल पत्नी के कमर दुखने लगे । बाजे नहीं बजे ।

आसमान के तारे चाँद और मेरी पत्नी के चेहरे में कोई भिन्नता नहीं देखने के कारण, भरपूर प्रकाशमय चेहरेवाली मेरी पत्नी के चेहरे को देखकर उलझन में पडे हैं कि चाँद असल में कहाँ है ?

बढते घटते रहनेवाले चाँद के मुँह में जो दाग है वह मेरी पत्नी के चेहरे में नहीं है । यह तो चाँद से भी अति सुंदर है ।

चाँद तुम सदा जीते रहो । अगर तुम भी मेरी पत्नी के समान सदा ही चमकनेवाले चेहरा पा सकते हो तो मेरे प्यार पा सकते हो ।

हे चाँद ! अगर तुम्हें भी फूलों सी आँखेंवाली मेरी पत्नी के समान सुन्दर बने रहना है तो सबकी नजरों में नहीं सिर्फ मेरी नजर के सामने आओ ।

सबसे नरम अनिच्चम फूल और हँस पक्षी के मृदुल पंख दोनों मेरी पत्नी के मृदुल पैरों के लिए गोखरू के काँटे जैसे हैं । मेरी पत्नी इतनी मृदुल है ।

अर्यमा

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

दादा तुम्हारी कीर्ति ठहरती है अनंत तथा अत्यंत सुकुमारी
मिट गए अनंत काल चमक रहे हो तुम तब से आदिकाल
रहस्य अपना तुम अब तो बता दो जानने दो हमें भी मत ठुकराओ
सदियों से बनती रही है तेरी यह चमक तेरा यह काम अब तक
ठहरते हो तुम कैसे अशोक ? जगते जगाते तुम भरते हो चमक
उदारता तेरी कभी बदल जाती है बन जाती है वह तब उद्दण्डता
जलाकर जान ले जाते हो कभी-कभी बिना प्रयास के निर्दयी बन
जानलेवा कभी तुम बन जाते हो पर दादा जान भरते हो सब में तुम ।

दादा तुमसे चलती है यह दुनिया कुछ भी नहीं बनता तेरे बिन
अपने सुनहरे किरणों से तुम जगाते हो जन मानस और जीव को
तुम्हारे जगते ही जग जाते हैं पशु पक्षी बढ़ने लगता है दिन
तुमसे जगते हैं वन और जीवन बताओ कैसे संभव तेरे बिन ?
खेत खलिहान तुमसे बनते, खेल और मुस्कान भी बनते तुमसे
रात वह बीत जाती, थकान मिट जाता, भर जाता दिल में जान
नया दिन आता है यहाँ, सबको जगाता है यहाँ कैसे संभव तेरे बिन
हर कार्य का कारण बन जाते हो निवारण बन जाते हो तुम दादा ।

सोने का रंग लेकर तुम उगते हो लाली में लाल होकर डूबते हो
सुबह शाम सबका मन हर्षाते हो, सुख बरसाते हो नित तुम दादा
दोपहर को अरे गर्मी के हर पल को तुम क्यों गरमाते हो ?
दुविधा नहीं वह तो घोर कठोर दंड सा हो जाता है जलने लगता है
गर्मियों में कठोर रूप अपनाकर हे दादा तुम जान भी तो ले जाते हो
प्राण दाता बने रहो हे दादा तुम सबके प्यारे जीवों पर दया करो
एक दिन के दिनचर्या में तुम क्या-क्या सिखा देते हो हमें ?
दादा जिंदगी परिवर्तनशील है कभी सुख और दुख का एक अनोखा खेल है ।

अर्हम

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

अरे सुबह–सुबह यह क्या कर रहे हो ? सालों से तेरा यही काम चल रहा है । कुछ सुनने के पहले ही लाठी, चाकू लेकर घूमना और सामनेवाले पर वार करना । अपने आप को क्या समझ रखे हो ? 65 साल के हो गए हो । दो चार पोते के दादा बन चुके हो, अभी भी अक्ल नहीं आया । बात बात पर झगड़ना और लोगों पर चढ़ जाना । जिंदगी के इतने साल के बाद भी तुम कभी नहीं सुधरोगे । पहले तो फिर भी ठीक है, समझो इसे यौवन का पागलपन था । अभी इतने सालों के बाद भी नहीं सुधरोगे तो धिक्कार है । अपने पति को रोकने के उद्देश्य से उस पर चिल्ला रही थी सुशीला ।

अरे चुप । अब तेरा मुंह बंद करो । तुम क्या समझ रही हो ? मुझे ना मर्द समझ रही हो क्या ? तुम अकेली क्या ? पूरी दुनिया रोकेगी ना, तब भी मैं रुकनेवाला आदमी नहीं हूँ । हर चीज पर अहिंसा का पाठ मत पढ़ाओ । मैं वीर वंश का हूँ और वीर वंश का लाज रखूँगा । सिर्फ मैं ही क्या मेरे उम्र के कितने सारे आएँगे देख लेना । अगर आज हम चुप रहेंगे तो हमारी आनेवाली पीढ़ी कुछ भी कर नहीं पाएगी । अभी से उनके दिमाग में इस बात का बीज बो देना चाहिए तभी वह वृक्ष बनकर आगे सफल रहेगा । कल कोई दुस्साहस करेगा तब उसका बदला वे लोग ले पाएँगे । तुम घर के अंदर जाओ और खाना पकाने का काम करो । मुझे उपदेश देने का अधिकार मैंने तुझे दिया नहीं । अपना सारा गुस्सा अपनी पत्नी पर उतार रहा था अरुण ।

मुझे कुछ भी नहीं कहना है । तुम जो भी करोगे करने देना है । अरे जमाना बदल गया है । वही गांठ पकड़कर मत बैठो । जिस दुनिया में तुम जी रहे थे ना वह तो बहुत पुराना है । आज के विकसित नव देश में कुछ अच्छी भावनाओं को स्थान दो और सुधरने का नाम लो । लो आ गए तेरे गुंडे कृष्णा, पदमा, रामु सब के सब । ले जा, इनको और कुश्ती लडो । मुँह दिखाती हुई उत्तर देने लगी सुशीला ।

हाँ तुम भी सुन लो । आ रहे हैं हमारे गुरुदेव श्री विजय मुनीश्वर । उनके मुँह से सुन लेना । नारी को सदा नरम रहना चाहिए और आदमी को गरम । आइए

गुरुदेव । हमें आशीर्वाद दीजिए । अपनी भाषा के लिए हम अपनी जान भी कुर्बान करेंगे । जरा इसको अब समझाइए । यह मुझे जाने से रोक रही है । गरम से नरम होते हुए अपने दोनों हाथ जोड़े हुए अरुण ने गुरु से विनती की ।

कहाँ जा रहे हो बेटा यह तो बताओ मुनी में शांत स्वर में कहा । इस प्रांत में सिर्फ मेरी भाषा चलेगी । किसी और भाषा को यहाँ स्थान न देंगे । देश और अन्य भाषाओं को यहाँ लादनेवाले को सबक सिखाने के लिए तोड़फोड़ करने निकल रहे हैं हम । यह हमें रोक रही है ।

जाओ बेटा लेकिन मेरे एक सवाल का उत्तर देकर फिर जाना । मुझे तुम यह बताओ कि तुम्हारा बेटा कहाँ काम कर रहा है ? क्या काम कर रहा है ? अपने बेटे की बढ़ोतरी करते हुए अरुण ने कहा – मेरा बेटा वह तो सरकारी अफसर है तमिलनाडु में बड़ा अधिकारी है । गर्व के साथ उत्तर दिया अरुण ।

सरकारी पद का उच्च अधिकारी बन गया बहुत बड़ी बात है । लेकिन तुझे पता है तमिलनाडु के सरकारी अफसर बनने के कारण उसे तमिल सीखना जरूरी है । अब तक वह तमिल में काम करता ही होगा । क्या उसके तमिल सीखने से तुम्हारी मातृभाषा को कोई हानि पहुँची ? बताओ ।

अरुण अवाक रह गया । उसके पास इसका कोई उत्तर नहीं था । उसका चेहरा उतर गया । शांत भाव से विजय मुनि ने कहा – मातृभाषा और प्रांत की भाषा हमारी जान है, शान है, मान है, उसका अलग ही सम्मान है । लेकिन उसके साथ कुछ और भाषाएँ सीख लेने से उसका गौरव कभी घटनेवाली नहीं है ।

अपनी भाषा से सच्चे प्यार करने वाले को तोड़फोड़ और दूसरी भाषा को रोकने में नहीं, अपनी भाषा की उन्नति का कार्य करना चाहिए । प्रांत की भाषाओं में निकलनेवाली पुस्तकों को खरीद कर लेखकों का उम्मीद बढ़ा सकते हैं । जब आप दूसरी भाषा सीख लेंगे तब अपनी भाषा की विशेषता को दूसरी भाषा में ले जाकर हमारी भाषा की महानता दुनिया को दर्शा सकते हैं । भारतीय जनता को हमेशा यह बात ध्यान में रख लेना चाहिए कि हम सब तरह से संपन्न है । हमारी बुद्धि और शक्ति हमें सिर्फ एक भाषी नहीं बहुभाषी बनने के काबिल बनाती हैं ।

लाठी छोड़कर गुरुदेव के चरण अपने साथियों के साथ छूने लगा अरुण । अरुणोदय अब शुरू हो गया होगा ।

प्रसन्न रहने का मूल मन्त्र

– श्री. रीता सिंह,
बेंगलुरु, कर्नाटक

संसार में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है – ईश्वर की आराधना करना । ईश्वर की आराधना ही इस संसार में प्रसन्न रहने का मूल मंत्र है । ईश्वर की आराधना के दो विभिन्न मार्ग हैं – धर्म एवं अध्यात्म

धर्म एवं अध्यात्म दोनों ही ईश्वर प्राप्ति के मार्ग हैं । लेकिन दोनों में ईश्वर प्राप्ति के स्वरूप अलग–अलग हैं । धर्म के द्वारा हम पूजा–पाठ जप तप अथवा अन्य वैदिक क्रियाओं से ईश्वर को प्राप्त करते हैं अर्थात् ईश्वर को प्रसन्न करते हैं । लेकिन अध्यात्म में हम अपनी आत्मा को ईश्वर में मिला देते हैं । अर्थात् आत्मा का परमात्मा से मिलन ही अध्यात्म है । परमात्मा को प्रसन्न करना व परमात्मा में मिल जाना दो अलग–अलग मार्ग हैं पर दोनों का लक्ष्य एक ही है वो परमात्मा ।

सबसे पहले हम धर्म के बारे में जानेंगे क्योंकि हम अपने जन्म के साथ ही एक धर्म से जुड़े होते हैं । एक बालक का जन्म जिस परिवार में होता है वह परिवार जिस धर्म को मानता है उस बालक का भी स्वतः वही धर्म हो जाता है । यदि परिवार का वातावरण धार्मिक होता है तो उस परिवार में जन्म लेनेवाले बच्चे भी अधिकतर धार्मिक प्रवृति के हो जाते हैं । बच्चे के जन्म के समय उसके धर्म के अनुसार ही रीति रिवाज़ होते हैं । जैसे–जैसे बालक बड़ा होता है उसे अपने धर्म के बारे में ज्ञान मिलता जाता है । अपने धर्म के अनुसार ही पूजा–पाठ, व्रत–त्यौहार बगैरह किये जाते हैं । सब धर्मों के अलग–अलग नियम होते हैं जिनके अनुसार हम ईश्वर को जानने और पाने का प्रयास करते हैं । धर्म हमारी संस्कृति से हमें जोड़े रखता है । इसमें बहुत सारे बाहरी कर्म होते हैं । जैसे मन्त्र जाप, चालीसा पढ़ना, यज्ञ–हवन, मन्त्र सिद्धि इत्यादि अपने अपने धर्म के अनुसार बहुत सारे कर्म होते हैं ।

लेकिन कलयुग में पाप की अधिकता अधिक होने के कारण ईश्वर ने धर्म का मार्ग भी बहुत सरल बना दिया है । तुलसीदास कृत रामचरित मानस में

लिखा है कि कलयुग केवल नाम आधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा अर्थात् कलयुग में ईश्वर का स्मरण करने मात्र से ही जन्म मरण के बंधन से पार पाया जा सकता है ।

अध्यात्म मार्ग भी ईश्वर प्राप्ति का ही मार्ग है । लेकिन दोनों में ईश्वर प्राप्ति का स्थान अलग-अलग है । धर्म में हम ईश्वर को बाहर देखते हैं एवं अध्यात्म में हम अपने अन्तःकरण में ईश्वर को देखते हैं । अध्यात्म के मार्ग में हमें किसी वाह्य साधन की आवश्यकता नहीं होती । अध्यात्म यानी अपनी आत्मा के बारे में जानना और आत्मा का परमात्मा से मिलन ही अध्यात्म है । इसमें हम ईश्वर को अपने भीतर ही खोजते हैं । धर्म और अध्यात्म दोनों ही हमें ईश्वर की ओर ले जाते हैं । धर्म के द्वारा हम ईश्वर को पाने का प्रयास करते हैं । जबकि अध्यात्म के द्वारा हम ईश्वर में मिलने का प्रयास करते हैं अर्थात् आत्मा और परमात्मा का एक होना ।

अध्यात्म में स्वयं को जानने का सबसे सुलभ मार्ग ध्यान है । इसमें हम स्वयं को जानते हैं कि हमारी आत्मा उस परमात्मा का ही अंश है । और जब हम अपनी आत्मा की ओर देखते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि यह जगत भौतिक है और हमारी आत्मा अजर अमर है । तब हम इस भौतिक जगत में रहते हुए अपनी आत्मा के कल्याण के लिए परमात्मा की शरण में आते हैं एवं अध्यात्म के द्वारा उनमे मिलने का प्रयास करते हैं । निरंतर प्रयास के द्वारा हम अपने लक्ष्य को पाने में समर्थ हो जाते हैं ।

अध्यात्म में आचरण की शुद्धता पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है । इसके लिए हमें अपने व्यवहार का निरीक्षण भी करना पड़ता है । परमात्मा से मिलने के लिए हमें स्वयं का आचरण शुद्ध करना पड़ेगा । हमारा आचरण जितना शुद्ध होगा, अध्यात्म में हमारी प्रगति उतनी ही तीव्रता से होगी । इसके साथ ही स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ।

स्वच्छ रहने पर हमारे विचार भी स्वतः स्वच्छ रहते हैं । मलीनता में हमेशा नकारात्मक विचारों की प्रधानता रहती है । इसलिए स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए । हमारे आचरण की शुद्धता और हमारे सात्विक विचार हमें धर्म और अध्यात्म की ओर ले जाने में एक सेतु का कार्य करते हैं । और इस प्रकार हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने लगते हैं । यही प्रकाश हमारा लक्ष्य है । इस लक्ष्य को प्राप्त करते ही हम आतंरिक प्रसन्नता को प्राप्त कर लेते हैं ।

बने रहो पगला, काम करेगा अगला

(हास्य–व्यंग्य)

– श्री. विनोद कुमार विक्की,
खगड़िया, बिहार

समय के साथ सरकारी सेवकों के संदर्भ में प्रचलित 'बने रहो पगला, काम करेगा अगला', 'काम करो या ना करो, काम की चिंता अवश्य करो', 'बारह बजे लेट नहीं, तीन बजे भेंट नहीं' आदि अवधारणाओं में व्यापक बदलाव देखने को मिल रहा है ।

मूलतः सरकारी सेवक का अभिप्राय ऐसे ढोल से होता है, जिसे जनमानस एवं अफसरशाही सदृश डंडों के द्वारा सेवापर्यंत बजाया जाता है । भूलोक का ऐसा निरीह प्राणी, जो गुर्रानेवाली शेरनी सदृश घरवाली एवं दहाड़नेवाले शेर सदृश अधिकारी के बीच अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए संघर्षरत रहता है । कार्यों के प्रति संवेदनशीलता के आधार पर सरकारी कर्मचारियों की मूलतः चार कैटगरी है ।

प्रथम कैटगरी के अंतर्गत मेहनतकश कार्यालय समर्पित शेषनाग रूपी कर्मचारी आते हैं, जिनके मस्तक पर कार्यालय अथवा विभाग का संपूर्ण भार टिका होता है । दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसे कर्मचारी कोल्हूवाले बैल के मौसेरे भाई होते हैं ।

इन्हें जीवन गुजारा भत्ता या वेतन तो एक व्यक्ति का मिलता है, किन्तु कार्य बोझ दर्जनों व्यक्ति का होता है । समय से पहले कार्यालय आना एवं सबसे बाद में कार्यालय से वापस लौटना इनके दैनिक कार्य अवधि में शुमार रहता है । इनके जीवन में छुट्टी या रेस्ट का प्रावधान ना के बराबर होता है ।

दूसरे वर्ग में ऐसे कर्मी आते हैं, जो कार्य अवधि में स्वयं को सबसे व्यस्त दिखाने का प्रदर्शन करते हैं । इनके टेबल पर फाइलों का अंबार लगा रहता है । छाती अथवा बगल में दो–तीन फाइलों को दबाएँ कार्यालय में चलते–फिरते भी नजर आ जाते हैं । यदि ये बैंक, रेलवे या किसी अन्य सरकारी

प्रतिष्ठान में कम्प्यूटर आधारित कार्य को देखते हो, तो हर दूसरे दिन इनके कम्प्यूटर सिस्टम में तकनीकी समस्या अथवा प्रत्येक आधे घंटा पर सर्वर डाउन या लिंक फेल की समस्या बनी रहती है। भविष्य के भरोसे काम को टालनेवाले ऐसे कर्मी विभागीय जिम्मेदारी के हिसाब-किताब में भले ही कमजोर हो, किन्तु अपने वेतन भुगतान, एरियर, इंक्रीमेंट, टीए, डीए, राजपत्रित अवकाश, अर्जित अवकाश आदि का पूरा डेटा दिमाग में फ़ीड किए रहते हैं। कार्यालय अवधि में बगलवाले टेबल के झा जी, ओझा जी, वर्मा जी, शर्मा जी, गुप्ता जी आदि से विष्य में डीए/इंक्रीमेंट, पीएफ आदि के विषय पर हमेशा अपडेट होते रहते हैं। विलम्ब से कार्यालय आना एवं समय से पहले कार्यालय छोड़ना इनके दिनचर्या में समाहित होता है।

तीसरी कैटगरी में धन की देवी लक्ष्मी के मानस पुत्र आते हैं। वैसे इनका मौलिक वेतन इतना कम होता है कि पारिवारिक खर्चा को लुढ़का पाना मुश्किल होता है किन्तु फाइल बढ़ाने, काम करवाने आदि के शर्तिया अनुबंध पर इतनी अतिरिक्त माया अर्जित कर लेते हैं कि इनका परिवार आलीशान बंगला में आवासित एवं पजेरो/बोलेरो पर भ्रमण करता दिख जाता है। टेबल के नीचे से धनागमन की नीति इनके पूर्वजों की ही देन मानी जाती है।

चौथी कैटगरी में चापलूसी का लॉलीपाप चूसने वाले कर्मचारी आते हैं। पृथ्वी पर इनका अवतरण तेल और मक्खन के साथ होता है। जिनका प्रयोग एवं उपयोग सरकारी सेवा के दौरान किया जाता है। सामान्यतः ऐसे कर्मचारी आत्ममुग्ध कार्यालय प्रधान या अधिकारियों की नाक का बाल होते हैं। साहब की मक्खन मसाज के अलावा अन्य कर्मचारियों के छींकने-खाँसने से लेकर मल-मूत्र विसर्जन तक की हर क्षण चुगली से साहब को अपडेट करना ही इनका परम कर्तव्य होता है। विभाग के अधिकांश कर्मचारी छुट्टी, वेतन आदि सहित अन्य बातों को साहब तक पहुँचाने के लिए चुगलेश्वर बाबू का ही सहारा लेते हैं।

दिलों में प्यार भरो। सबसे प्यार करो।

लघुकथा

अतिथि सावित्री बाई

– श्री. मदन सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

सावित्री किसी आपदा में बच जाने से एक साधू ले आये लेकिन तीन साल की बच्ची को ना तो गोद में उठाकर चल सकते थे ना ही सावित्री पैदल चल सकती थी । उसे नहलाने और खाना खिलाने के लिए माँ चाहिए इसलिए अधेड़ साधू ने एक विधवा जानकी देवी के घर में शरण ली । जानकी जमकर दोनों की सेवा करती थी तो साधू उसके पास छोड़ कर भ्रमण करके आते लेकिन सावित्री जानकी को माँ तो साधू जगत प्रसाद को बापू कहती थी । लोग कानाफूसी करने लगे ।

एक दिन विवाद बढ गया तो लोगों ने कहा साधू बाबा जानकी से शादी क्यों नहीं कर लेते तो साधू उन्हें फटकार जरूर लगाता लेकिन ऐशोआराम की जिंदगी एवं जानकी की सेवा से वह काफी प्रभावित रहने लगे ।

आखिर एक दिन विधिवत साधू जगत प्रसाद एवं जानकी की शादी हो गई । सावित्री हालांकि अतिथि बनकर आयी थी इसलिए आज उसे ईश्वर की कृपा से घर ऐशोआराम माँ-बाप मिल गये ।

ईश्वर कब किसे फटेहाल कर दे तो कब मालामाल यह आज साधू से पति एवं बाप बने जगत प्रसाद ने लोगों से कहा कि मैं कोई गरीबी के कारण साधू नहीं बना । साधू-संतों की सेवा करने के कारण लखपति परिवार को छोड़कर साधू बन गया । लेकिन ईश्वर ने शादी एवं बेटी उपहार में नहीं बल्कि पूर्व निर्धारित थीं ।

पराजय को पराजित ठहरने दो,
तुम जीतते रहो ।।

रुपया माया है

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

दो साल के बेटे पिंकू की बीमारी के कारण उसके जाँच कराने, राकेश और निशा अस्पताल गए थे। अस्पताल में आशा से बहुत अधिक समय लग गया। पिंकू के जाँच खाली पेट ही होने थे, इसलिए वह भूखा था। पिंकू भूख से रोने लगा तो निशा उसे चुप कराने लगी, पर भूखा बच्चा भला कैसे चुप होता ? दवाई खरीदने के लिए राकेश ने जेब में हाथ डाला तो पता चला कि अस्पताल की भीड़ और लंबी लाइन में कोई हाथ की सफाई दिखा गया था।

निशा ने कहा, आप मेरा पर्स ले जाइए। झट से राकेश पर्स लेकर दवाई की दुकान की ओर मुड़ गया, जो सड़क के उस पार सामने ही थी। निशा पिंकू को गोद में लिए खड़ी रही। तभी वहाँ एक केले का ठेला आकर खड़ा हुआ। अब तो पिंकू की भूख और प्रबल हो गई और वह केले के लिए जोर-जोर से रोने लगा। निशा ने ठेलेवाले से कहा, भैया बच्चे को एक केला दे दो। पिंकू के पापा सामने दवाई लेने गए हैं। अभी आते होंगे, पैसे बाद में दे दूँगी। कठोरता से ठेलेवाले ने कहा, मैं ठेला लुटाने के लिए नहीं खड़ा हूँ। जब पैसे हों, तब ले लेना आप। हालांकि वह भी अपनी जगह सही था, पर निशा की आँखें सजल हो गईं। दुकान पर अधिक भीड़ होने के कारण राकेश अब तक लौट कर नहीं आए थे।... या फिर प्रतीक्षा के पल बिताना कठिन ही होता है। निशा विवश सी देख रही थी।... और पास में कहीं मंदिर के कथा वाचक का स्वर लाउडस्पीकर पर गूँज रहा था, रुपया मिथ्या है, माया है।

मेरा जन्म जीतने के लिए हुआ है।
मैं हर बार जीतूँगा।

नारी शक्ति

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',

शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

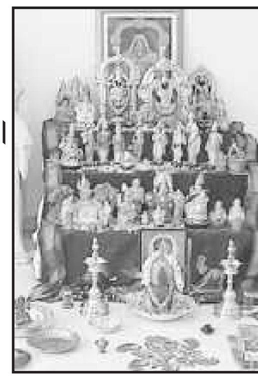

आदि शक्ति माँ भगवती, शत–शत तूझे प्रणाम है ।
तू ही मुक्ति, तू ही भक्ति, और, तू रक्षा का धाम है ।
तू जग–जननी, तू जन–कल्याणी, तेरा दुर्गा नाम है ।
भक्तों के तुम पालक, आशीष देना तेरा काम है ।
तू दयामयी, तू वात्सल्यमयी, तू ममता की छाँव है ।
तुम कृपा के सागर हो, चारो धाम ही तेरा पाँव है ।

हे महिषमर्दिनी, हे वज्रधारिणी, तू ही पुरनकाम है ।
तुम ही सुर–नर की रक्षक, माँ तुमसे जग महान है ।
माँ की सेवा होती है तो, माँ तेरी पूजा हो जाती है ।
माँ की खुशियों में ही माँ, तू भी खुश हो जाती है ।
नारी शक्ति की प्रतिष्ठा से, तेरी सेवा पूरी होती है ।
नवदिन नवरात्र में यही, साधना जरूरी होती है ।

जहाँ नारी का होता सम्मान, वही होता उत्थान है ।
जहाँ नारी की पूजा होती, वही देवों का ध्यान है ।
बेटियों के मान–प्रतिष्ठा का, पर्याय भी नवरात्रि है ।
बेटी के अभिमान व रक्षा का, पर्याय भी नवरात्रि है ।
ये नारियों के प्रतिष्ठापन का, पर्व होता नवरात्रि है ।
ये नारियों के स्थापन का, भी पर्व होता नवरात्रि है ।

जीवन पथ में संगी साथी...

– श्री. सुनील चन्द्र,
नैनीताल, उत्तराखण्ड

श्री कृष्ण जैसा हो पथ प्रदर्शक तो अर्जुन तुम बन जाओगे,
शकुनि जैसा हो मार्गदर्शक तो दुर्योधन बन नष्ट हो जाओगे ।।
संगत सुदृढ़ पवित्र रखो बंधु उसमें ही है हम सबका भला,
जग में सहचर जरूरी बन्धु अकेले को तो दुनिया ने छला ।।

बिन योग्य कुशल संगी के तो श्रीराम ने भी लंका में कदम न रखा,
संग थे उनके हनुमान, सुग्रीव, भ्राता लक्ष्मण और विभीषण सखा ।।
एक वनवासी सन्यासी ने अभिमानी रावण को था पस्त किया,
एकजुटता धर्म नेक नियत ने पाप अधर्म को था ध्वस्त किया ।।

जब–जब संकट आता है साथी हनुमान व श्री कृष्ण बन दिखलाता है,
धैर्य–साहस नर जब खोने लगता है तब संगी ही पुनः उत्साह बढ़ाता है ।।
सुसंगत सभ्य समाज में जन्मे पले–बड़े सुत श्रवण कुमार बन जाते हैं,
कुसंगत भ्रष्ट आचरण के चक्र में कई कंस बन कुल कलंकित कर जाते हैं ।।

विभीषण का कल्याण हुआ छोड़ सहोदर उन्होंने श्रीराम को था चुना,
सुदामा के अभाव खत्म हो गए उन्होंने कृपानिधान श्याम को था चुना ।।
अगर मित्रता का हो चयन पवित्र आपसी बंधन हो सर्वदा स्वार्थ मुक्त,
निश्चित ही मनुज जीवन होगा सरल, सहज, सार्थक और उद्देश्य युक्त ।।

नेक इरादे सच्चे संकल्प जब मन में होंगे मित्रता एक मिसाल बनेगी,
कोई न विपदा हमें स्पर्श करेगी मित्रता संजीवनी बन हर कष्ट हरेगी,
पुनीत पावन मित्रता इस संसार का है एक दिव्य अलौकिक संगम,
प्राचीन हो या वैदिक काल मित्रता ने लहराया है सदैव जीत का परचम ।।

रिक्तता

– श्री. प्रिया देवांगन 'प्रियू',
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

चिड़ियों के कलरव से पहले, नयन सदा खुल जाते थे ।
भोर सूर्य के दर्शन पा कर, तन मन शक्ति जगाते थे ।।

पुष्पों की जब मंद सुरभि भी, आँगन में मुस्काती थी ।
देख आपकी प्रेम प्रभा को, पूर्वा शोर मचाती थी ।।

सूर्य तेज सम चमकीला मुख, सात्विक जीवन अपनाते ।
दया प्रेम सँग मीठी बोली, हँसकर ही करते बातें ।।

क्रोध न दिखता क्षण भर उनमें, काया थी निर्मल माटी ।
नेक कार्य कर नाम कमाए, छोड़ चले यह परिपाटी ।।

लगता जब आनंदित जीवन, क्यों बाधा घिर आती है ।
हर्षित होता मन इक क्षण में, अगला दुःख थमाती है ।।

पिता बिना संसार अधूरा, सूना मेरा आँगन है ।
आगे बढ़ने का प्रयास है, किंतु सतत विह्वल मन है ।।

वही भोर है वही किरण पर, पात-पात हैं मुरझाए ।
बिना छुए हम चरण आपके, कैसे आगे बढ़ पाएँ ।।

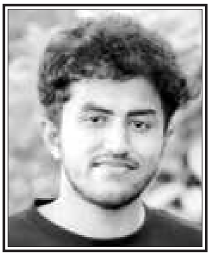

भगवान

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

अपने कर्मों का गुरु
हमारे धर्म का महा गुरु
सब कुछ पता है इनको
आरंभ और अंत सबकुछ ।
यह लोग यह दुनिया
सब कुछ उनकी माया
चलते रहते हैं साथ
बनकर ये हमारी छाया ।

तेरे हार और जीत में
तेरी हँसी और उदासी में
साथ रहते हैं सदा रहते
दूर करते तेरे दुखों को ।

करो इनकी प्रार्थना रोज
ठहरो सदा तुम सकारात्मक
हर मुसीबत में लो इनका नाम
हमेशा सफल रहेगा तेरा काम ।

हे शिक्षक - शत-शत नमन आपको

– श्रीमती.
अनुराधा. के,
मंगलूरु, कर्नाटक

होता है हर व्यक्ति जन्म से ही विद्यार्थी ।
किसी की भी सीख कभी होती नहीं है पूर्ति ।
प्रकृति के हर कण से लेकर सदा स्फूर्ति ।
प्राप्त करते हैं ज्ञानोत्कर्ष से जीवन में कीर्ति ।

माता से ही होता है शिक्षा का आरंभ ।
दुनियादारी सिखाते हैं पिता बिना विलंब ।
पाठशाला में शिक्षक तो है ही पथ प्रदर्शक ।
छात्र सदा के लिए है जीवन मार्ग का अन्वेषक ।

कहीं से, कभी भी आ जाए ज्ञान की आभा ।
होती है प्राप्त सब से सुज्ञान की अनमोल प्रभा ।
हर व्यक्ति होता है किसी न किसी विषय से अज्ञ ।
कुछ न कुछ सीख पाकर सबसे, बन पाएगा सर्वज्ञ ।

चलाकर चार कदम, बात सिखाने वाली माता ।
पकड़कर हाथ, जीवन की रीत सिखाने वाले पिता ।
भवितव्य के हर मंजिल पर पथ-प्रदर्शक शिक्षक ।
हर पड़ाव पर सीख देने वाले सब के आगे अनु है नत मस्तक ।

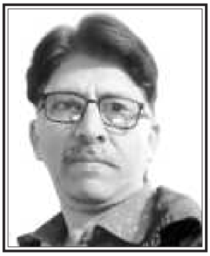

भीषण बाढ़ विभीषिका... !

– श्री. संजय एम.
तराणेकर, इन्दौर, म.प्र.

लाखों परिवार अपने ही घरों में कैद,
भीषण बाढ़ विभीषिका झेलते खेद ।
जीवन 'अस्तित्व' की लड़ाई में दिखा,
देश के अन्नदाता की हैं यह भूमिका ।

इस घड़ी में जरूरी सभी हो एकजुट,
त्राहि-त्राहि करते रहें दम रहा हैं घुट ।
आमजन अपने स्तर पे सहयोग करें,
सरकारी मशीनरी इसका ध्यान धरे ।

समाजसेवी राहत कार्य में जुट चुके,
बॉलीवुडी मददगार हाथ खुल सकें ।
सहयोग मानवीय संवेदनाएँ प्रतीक,
जन-जन आँसू पोंछे जवाब सटीक ।

देवी दुर्गा भवानी

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

देवी दुर्गा भवानी मात तारा, माँ तू ही है मेरे जीवन का सहारा,
ये जीवन तुझपे दाती वारा, बहा दे जीवन में अमृत धारा ।
समय चलता है चाल, माया का ये जाल,
कोई पूछे न हाल, कष्ट अति भारी विशाल,
मायानगरी में दुःखों से हारा, माँ तू ही है मेरे जीवन का सहारा
अंबा तू है दयाल, रखें सब का ख्याल,
पहने मुंडो की माल, संकटों को देती टाल,
तूने भक्तों को भव से तारा, माँ तू ही है मेरे जीवन का सहारा
दुर्गा तू है कृपाल, हम भवानी तेरे लाल,
न हो बाँका बाल, ''आनंद'' हो जाएगा मालामाल,
मैं हूँ तेरा सेवक भगवती प्यारा, माँ तू ही है मेरे जीवन का सहारा
तू दुष्टों की है काल, काली चण्डिका विकराल,
ओढ़े चुनरी लाल लाल, माँग टीका सोहे भाल,
लगा दे मेरी नैया को किनारा, माँ तू ही है मेरे जीवन का सहारा
देवी दुर्गा भवानी मात तारा, माँ तू ही है मेरे जीवन का सहारा,
यह जीवन तुझ पर दाती वारा, बहा दे जीवन में अमृत धारा ।

ग़ज़ल

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

एक टुकड़ा सुकून का मिल गया होता ।
भूख का सिलसिला सिमट गया होता ।

गर पेट को न होती रोटियों की चाहत ।
तो आपस का झगड़ा निबट गया होता ।

यदि ज़िन्दगी की रफ़्तार कम हो जाती ।
चाहतों का क़ाफ़िला मिट गया होता ।

अपनी हसरतों के गर गुलाम हो जाते ।
तो दिल का ये बाज़ार लुट गया होता ।

यदि मुहब्बतें यहाँ नीलाम होने लगती ।
तो ग़रीब मुहब्बत को तरस गया होता ।

मन से मन की दूरियाँ कम हो जाती ।
गर प्रेम का बादल बरस गया होता ।

लोगों के दुःख दर्द सब कम हो जाते ।
इंसान इंसानियत के निकट आ गया होता ।

किताबों का ज्ञान जो सिखलाते हैं

– कैप्टन डॉ. जय महलवाल (अनजान),
बिलासपुर, हि.प्र.

शून्य दिमाग़ की कसरत जो करवाते हैं,
किताबों का ज्ञान जो सिखलाते हैं,
ऐसे महान व्यक्ति होते हैं जो,
वो श्रेष्ठ जन ही सच्चे शिक्षक कहलाते हैं ।

जीवन में ज्ञान की ज्योति जो जलाते हैं,
ज्ञान का अंधियारा जो मिटाते हैं,
अपने अनुभव से दूसरों का जीवन सफल बनाते हैं, ऐसे श्रेष्ठ जन ही सच्चे शिक्षक कहलाते हैं ।

सपने सच करने का मूल मंत्र जो सिखलाते हैं,
कठिन डगर पर आगे बढ़ने का मार्ग कराते हैं, जीवन रूपी संसार में संस्कारों से परिचय कराते हैं,
ऐसे श्रेष्ठ जन ही सच्चे शिक्षक कहलाते हैं ।

ईमानदारी, सच्चाई और लगन का पाठ जो पढ़ाते हैं,
हर क्षण को अवसर में बदलना जो सिखलाते हैं, जीवन में सफलता के शिखर तक जो पहुँचाते हैं,
ऐसे श्रेष्ठ जन ही सच्चे शिक्षक कहलाते हैं ।

सारी भाषाओं का जो ज्ञान सिखाते हैं,
शून्य दिमाग में जो ज्ञान का दीप जलाते हैं,
सफलता का असली मतलब जो सिखलाते हैं,
ऐसे श्रेष्ठ जन ही सच्चे शिक्षक कहलाते हैं ।

हर साल दीपावली ऐसे मनायें
किसी गरीब के घर आप दीप जलाए ।।

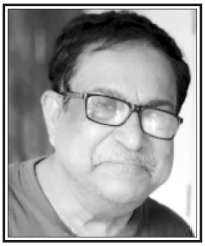

जगमग दीवाली

– श्री. महेंद्र कुमार वर्मा, पुणे, महाराष्ट्र

दीपक जी करते रहे, गहन तिमिर को मात,
थिरक उठी इक फुलझड़ी, दीवाली की रात ।

मारो मन के तिमिर को, करके खूब उजाला,
दीप जला के आस के, लाओ खुशियाँ पास ।

बेच रहा है दीप जो, उसके घर में यार,
दीवाली की रात में, दिखा नहीं उजियार ।

हर घर में दीपक जले, ऐसा कर करतार,
दीवाली में दीन को, मिले खूब उजियार ।

दीप जला के ख़ुशी के, छोड़ो प्रीत अनार,
उनकी जगमग से करो, दीवाली गुलजार ।

चकरी और अनार से, मिली ख़ुशी भरपूर,
चटख पटाखे जब चले, दुखड़े भागे दूर ।

माँ लक्ष्मी को पूज कर, सबने की जयकार,
खुश हो दादा ने कहा, लो मीठा सरकार ।

दीप जले मस्ती भरे, दीवाली की रात,
चले पटाखे प्रीत के, ख़ुशी मिली सौगात ।

रंगोली से सज उठे, रोशन हुए द्ववार,
दीपों ने फिर कर दिया, सारा घर गुलजार ।

दीवाली पर कर रहे, सचमुच सभी धमाल,
दीप जला के ख़ुशी के, सब हो रहे निहाल

करूँ निवेदन

– श्री. मीरा सिंह 'मीरा', बक्सर, बिहार

हाथ जोड़कर करूँ निवेदन
भगवन् शीश झुकाऊँ मैं ।
ज्ञान खजाना दिए मुझे जो
जग में मुफ्त लुटाऊँ मैं ।।

भटके कोई राह कहीं तो
उसको राह दिखाऊँ मैं ।
रहे मनोबल इतना ऊँचा
कभी नहीं घबराऊँ मैं ।।

नाश तिमिर का करूँ हमेशा
जहां कहीं भी जाऊँ मैं ।
चमक बिखेरूँ इस दुनिया में
जग रौशन कर जाऊँ मैं ।।

हर निर्बल का बल बन जाऊँ
हिम्मत से भर जाऊँ मैं ।
मायूसी को दूर भगाऊँ
हँसी खुशी बन जाऊँ मैं ।।

बनकर मीठी याद गुरु जी
याद किसी को आऊँ मैं ।
अगर ज़रूरी हो जग खातिर
बलि बेदी चढ़ जाऊँ मैं ।।

चाह यही बस मेरे मन की
तुमसे सच बतलाऊँ मैं
कभी किसी पर ज़ुल्म अगर हो
मौन नहीं रह पाऊँ मैं ।।

हिन्दी, भारती के माथे की बिंदी

– श्री. मीनाक्षी,
देहरादून, उत्तराखंड

आओ सुनाती हूँ कहानी
हिन्दी कैसे बनी महान
भारत मा माथे की बिंदी
यही बढ़ाएँ देश की शान ।।

संस्कृत माँ की बेटी है ये
पाली प्राकृत धरे स्वरूप
अपभ्रंश तक आकर देखो
बनी आज हिंदी अनुरूप ।।

पाँच उप–भाषाएँ, सत्रह
बोली बढ़ा रही थी मान ।
एक हजार ईसवी से ही,
उदघोषित बढ़ता सम्मान ।।

रसखान–सूर से बेटों ने
बढा दिया है इसका मोल
ब्रजभाषा में गाकर कान्हा,
अमर किया जीवन अनमोल ।।

रामचरित लिख तुलसी बाबा
अवधी का करते विकास ।
कक्षाओं में आज विद्यार्थी
पढ़ते सादर गाते गान ।।

भक्ति रस था ब्रज अवधि में,
वीर रसोमय राजस्थान
खड़ी बोल यह खरी–खरी थी
मैथिल में शृंगारिक तान ।

समय बढ़ा परिवर्तन आया
काल द्विवेदी का आरम्भ ।
खड़ी बोली को खड़ा कर के,
बना दिया हिन्दी का स्तंभ ।।

लंबी की यात्रा हिन्दी ने
आज बनी भारत की शान ।
तभी देश स्वतंत्र होते ही,
राजभाषा बनी पहचान ।

तीन सौ तैंतालीस धारा
सितंबर चौदह था सरताज
तभी बही जो भाषा धारा
सिंचित कविता उस से आज ।।

जैसे लिखते वैसे पढ़ते
वैज्ञानिकता की है खान ।
कंप्यूटर हो या मोबाइल
लिखते अक्षर पाते ज्ञान ।।

देवनागरी लिपि में लिखते
मानक रूप सभी को भाय ।
स्थान विश्व की भाषाओं में
अपना तीसरा है रखाय ।।

हिन्दी हिन्द की जय सदा ही
भारतवासी गाएँ रोज ।
एक सूत्र में राष्ट्र पिरोय
हिन्दी है भारत की खोज ।।

रामत्ववाणी

– श्री. महेशकुमार
(हरियाणवी),
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

पावन नाम को पावन गाएँ
मिलकर राम नाम दोहराएँ ।
कर्मों की जग करता पूजा
राम नाम हैं जीवन दूजा ।।
जगत ने देखे कर्म तुम्हारे
निर्बल दुख के बने सहारे
राम–राम श्रीराम–राम श्री
राम–राम ही मनवा गा रे ।।
साथ के संगी छूट न जाए
ममतामयी मन रूठ न जाए ।
मुश्किल से मुश्किल हल होगी
राम प्रण का पूर्ण योगी ।
आँचल का सदा मान बढ़ाया
पिताः वचन पर पूर्ण पाया ।
सबको ये संदेश सुना रे
राम–राम ही मनवा गा रे ।।
राजपाट जिसे रोक न पाया
वनवासी वन जीत ले आया ।
दुश्वारी निर्बल की भोगी
राम नाम जपते हैं जोगी
जोगी भी जिन्हें संत बताएँ
बल–बुद्ध का वो भेद सिखाएँ
सीख, सीख कर चलता जा रे ।
राम–राम ही मनवा गा रे ।।
इंद्रियाँ जिसे ठग ना पाई
साथ रही और राह बनाई ।
प्रतिष्ठा का मान है ऊँचा
मर्यादित श्री राम समूचा ।।
प्रेम का झूठा बेर भी खाया
जीवन का सही पाठ पढ़ाया
ढंग में उनके ढलता जा रे
राम–राम ही मनवा गा रे ।।
बल में क्रोध कभी नहीं आया
सजती सुड़ौल सुशोभित काया ।
साथ में साथी मिलते जाएँ
राम निडर रह राह बनाएँ ।।
विक्राल समुंदर रोक न पाया
साथ में सेना तक ले आया
जल जीवों का हित किया रे,
राम–राम ही मनवा गा रे ।।
हाथ में जब कोदंड उठाया
क्षमता देख दानव घबराया ।
पराक्रम में अतिबलशाली
राम रीत की बात निराली ।।
युद्ध के सब मैदान बताते
प्रख्यात जीत की गाथा गाते
नियती ने संदेश दिया रे
राम–राम ही मनवा गा रे ।।
अहंकार को जड़ से मिटाया
खुशियों का गया दीप जलाया ।

चमक उठी प्रकाशमय लीला
राम गान है बड़ा सुरीला ।।
दिव्य रूप दुनिया बतलाए
मानव बन मानव में समाए ।
मूर्त ऐसी और कहाँ रे
राम-राम ही मनवा गा रे ।।
राम धर्म हैं अधर्म नहीं है
'राम-राम' करो शर्म नहीं है
भ्रम की शिक्षा भूल न जाए
जीवन खुद रामायण गाए ।।
मुश्किल का समाधान बताएँ
मिल-मिल कर सब ही दोहराएँ ।
राम-राम श्रीराम-राम श्री
राम-राम ही मनवा गा रे ।।

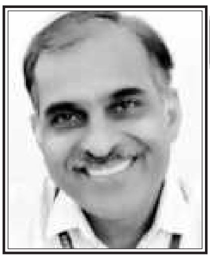

मुझे क्षमा करें

- श्री. मंगल कुमार जैन,
उदयपुर, राजस्थान

मेरी उपस्थिति से,
मेरी अनुपस्थिति से
या मेरी उपस्थिति मात्र से
या अनुपस्थिति मात्र से
मेरे शब्दों से
मेरे भावों से
या मेरे मौन रहने से भी
आपके ह्रदय को
तनिक भी ठेस पहुँची हो
या बहुत भारी ठेस पहुँची हो
या जाने अनजाने में भी
आपके ह्रदय पर घाव लगे हो
या किसी भी प्रकार से
आपके थोड़े से कष्ट का भी
कारण बना हूँ
तो उन सभी घाव के लिए
कष्ट के लिए
अशांति के लिए
मैं आपसे हाथ जोड़कर
विनम्रता पूर्वक
ह्रदय की अनंत गहराइयों से
क्षमा माँगता हूँ
आज क्षमा वाणी के पर्व पर
मुझे, मेरी सभी गलतियों,
भूलों, कमियों और
मेरे द्वारा किये गये
ऐसे सभी व्यवहारों के लिए,
जो आपके दुखों का,
अशांति का,
कष्ट का कारण बना है,
उन सब के लिए मुझे क्षमा करें !!
आपकी क्षमा से
मैं पुनर्जीवित होकर
जीवन जीने की
संजीवनी प्राप्त करूँगा
सबसे क्षमा... उत्तम क्षमा ।।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can’t do more than one level at the same time, in the same way you can’t able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books :

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

दंडी अडिगल नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

आँखें जब बंद कर लेते बताओ तब क्या हम देख पाते ?
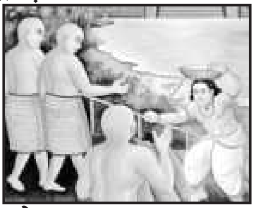
अंधेरा भर जाता सामने और कुछ देख नहीं पाते
दोष किसका है जो जग में अंधा बनाकर जन्म लेते
कुछ ऐसे महान भी हैं जो शाप को वर में बदल डालते
दंडी अडिगल नायनार जन्म से कुछ देख नहीं पाते थे
दुखी यह कभी नहीं हुए क्योंकि मन में शिव को देखते थे
पंचाक्षरी मंत्र का जाप दिन–रात करते रहते
बस किसी का गम नहीं मन में सदा शिव को भरते ।

चोल राज्य के तिरुवारूर में जन्म लेने का पुण्य मिला
शिव कृपा से भरे मात्र ही तिरुवारूर में जन्म पाते
आरूरा सर्वेशा कहकर जो भी हाथ महादेव के सामने जोड़ते
माँ की बात विनती करते ही पूर्ण रूप से उसे अपनाते
बचपन से शिव की प्रति भक्ति बढ़ती रही इनके मन में
बस कुछ और नहीं मंदिर जाकर शिव के दर्शन करते
मन के द्वार उसे खोलकर शिव को वहाँ ये सजाते
शिव शिव हर हर करते करते अपने दिन रात ये बिताते ।

जैनों का तब एक हद तक अधिकार जम गया था यहाँ

धर्म परिवर्तन करने आए थे सबको ये जैन बनाने
मंदिर का तालाब जो विशाल था कम होता गया
जैनों के कारण वह नित अब सिकुड़ता गया
देखा नहीं गया सह नहीं गया आँखें नहीं होने पर भी
ना किसी से मदद माँगे ना किसी के राह देखे
खुद उतर गए रस्सी और डंडी के बल पर तालाब को बड़ा बनाने
रहा नहीं गया जैनों से निकाल कर फेंक दिए रस्सी और डंडे को ।

खोदना छोड़ दो छोटे-छोटे जीवन को तुम जीने दो
आँख नहीं दिख रही है खान भी अभी कटवाएगा
कहो तुम यह काम करके क्या ही कर पाएगा
परिहास करने लगे दिल तब दुखाने लगे जैन संत तब
हंसने की बात नहीं है जो कर रहे वह क्या सही है ?
महादेव चाहे तो रोशनी लेंगे मुझ में कभी भी
बत्ती आपकी बुझ गई तो कहें जी सकते क्या अंधा बन इस जग में ?
मंदिर गए महादेव से अपनी बात कह कर घर चले ।

चंचल मन के साथ बड़े दुख के साथ सो गए थे नायनार
सपने में आए अपने वक्त से कह गए यह बात महादेव
आँखें वापस कर दूँगा उनकी दृष्टि मैं मिटा दूँगा कल
भक्त हो मेरे कभी दुखी ना ठहरो तुम प्यारे
राजा के सपने में भी गए उन्हें भी समझाएँ महादेव
चलो कल उनसे मिलो भक्त की दुविधा तुम दूर करो
पौ फटते ही उठ तैयार हुए राजा फौरन जाकर मिले
नायनार को साथ लेकर मंदिर के पास राजा चले ।

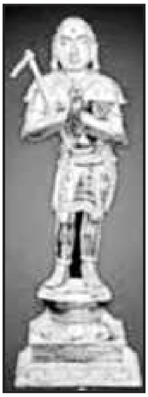

जैन भी बुलाए गए थे वहाँ राजाज्ञा था आना पड़ा उन्हें
राजा ने विनती की नायनार से दिखने उनकी शक्ति
पंचाक्षरी का जाप कर उतर गए तालाब में नायनार
तालाब से जब बाहर आए दिख गया पूरा संसार
जैनों को खोना पड़ा आँखों की सारी रोशनी
राजा ने आदेश दिया निकल जाओ अभी-अभी
गिरते गिरते तड़पते तड़पते चले गए वे बिखरते बिखरते
शिव पद पाए नायनार शिव में मिल पाए सेवा बहुत दिन करते-करते ।

दंडी नायनार अतुल, बने रहे थे सबल ।
आँखों की रोशनी पा, बन गए अति प्रबल ।।

आधार छंद - विधाता

- श्री. सुखमिला अग्रवाल भूमिजा,
मुंबई, महाराष्ट्र

सजी माँ भारती के भाल पर मन मोहिनी हिन्दी ।
दमकती विश्व भर में वो मधुरिम रागिनी हिन्दी ।।

जगत को दे रही छाया वृहद् तम वृक्ष भाषा का ।
खिलाती पुष्प भावों के सरल मृदु भाषिनी हिन्दी ।।

अतुल भंडार शब्दों का समंदर सा भरा गहरा ।
धरा की दिव्य धारा श्वेत वर्णीय हंसिनी हिन्दी ।।

सहज सुंदर सरल सौम्या सुभग शीला सलीला सी ।
सुपथ पथ गामिनी गंगा अटल वरदायिनी हिन्दी ।।

अलौकिक अक्षरा का 'सुखमिला' संसार है न्यारा ।
अमर आलोक मय अद्भुत अगम आधारिणी हिन्दी ।।

बाल कविता

जोकर

- श्री. राजकुमार
जैन राजन,
चित्तौड़गढ़, राज.

अजब-गज़ब हरकत करके
सब लोगों को खूब हँसाये
सर्कस का यह जोकर निराला
तरह तरह के खेल दिखाये ।

ऊँची टोपी, लंबी नाक
ढीली ढाली उसकी पोशाक
देख-देख उसके करतब
बच्चे रह जाते हैं अवाक ।

दिखने में वह बौना लगता
मस्त मलंग छौना लगता
कभी कूदता कभी लौटता
जैसे एक खिलौना लगता ।

खुद हँसता, सबको हंसाता
लगता वह सर्कस का हीरो
सबको खुशियाँ वही बाँटता
उसके बिना सब खेल ज़ीरो ।

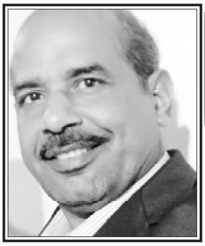

तिलक भोले को

– श्री. कार्तिकेय
कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

भोले की भक्ति में जब–जब,
मन की बाती जल जाती है,
सुबह–साँझ कैसे हो जाती,
पता नहीं चल पाती है ।
भोले की भक्ति में...
मेघ गरजते शंखनाद–से,
धुन तासे की आती है,
है सूरज की ऐसी लालिमा,
भोले को तिलक लगाती है ।
भोले की भक्ति में...
धरा का कण–कण थिरक रहा है,
पानी की रिमझिम बूँदों से,
गंगा भी अब उफन रही है,
भोले के पग छूने से ।
भोले की भक्ति में...
महक रही है पवन यहाँ भी,
फूलों की सुरभित क्यारी से,
मन भर कर फिर ध्यान लगाया,
अपने भोले भंडारी से ।
भोले की भक्ति में...
आओ जीवन की गति साधें,
भोले की भक्ति में रम कर,
मन वीणा की धुन पर नाचे,
शिव–शिव शब्द जुबां पर लाकर ।
भोले की भक्ति में...

संत का अवतार गुरुजी

– श्री. नलिन खोईवाल,
इंदौर, म.प्र.

है बहुत उपकार गुरुजी,
आपका आभार गुरुजी,
स्नेह आशीषों से चलते,
साल दिन और वार गुरुजी ।

ज्ञान का भंडार गुरुजी,
शिष्य का संसार गुरुजी,
देते मिट्टी के घड़ों को,
एक नव आकार गुरुजी ।

जीने का आधार गुरुजी,
है सपन साकार गुरुजी,
है समूची पाठशाला,
और है संस्कार गुरुजी ।

एक है सुविचार गुरुजी,
सब करें सत्कार गुरुजी,
तीर के तरकश में लाए,
शब्द की तलवार गुरुजी ।

हैं वेदों का सार गुरुजी,
करते नैया पार गुरुजी,
यूँ लगे जैसे धरा पर,
संत का अवतार गुरुजी ।

दो कविताएँ

– श्री. योगेंद्र पाण्डेय, देवरिया, उ.प्र.

1. बहुत दूर तक जाना है...

चाहें कितना हो कठिन लक्ष्य
तुम बनो सर्व विद्या में दक्ष
हो साधना इतनी प्रखर
कि मिले देवता भी प्रत्यक्ष
इस जग में हुए महान वही
जिसने संघर्ष को माना है,
कदम बढ़ाये चलो कि तुमको
बहुत दूर तक जाना है ।।

संकल्प तुम्हारा टूटे ना
सच का दामन छूटे ना
संबंधों में नेह बढ़े
भाई से भाई रूठे ना
तुम पूर्ण करो वे स्वप्न सभी
जिसको तुमने पहचाना है,
कदम बढ़ाये चलो कि तुमको
बहुत दूर तक जाना है ।।

समझो जीवन की गहराई
जन्म मृत्यु के बीच लड़ाई
तुमको जग में अमर बनाये
सदकर्मों की परछाई
जो अंधकार तन मन का हर ले
एक ऐसा दीप जलाना है,
कदम बढ़ाये चलो कि तुमको
बहुत दूर तक जाना है ।।

2. सद्भावना और कविता...

ना हिन्दू हो ना मुस्लिम हो
मानवता हो धर्म हमारा
जाति पाति का बंधन टूटे
समरसता हो मर्म हमारा !!

भाषाई झगड़े में पड़ के
खो दें न पहचान चिरंतर
लाल लहू है सब के रग में
फिर कैसा भेदभाव अंतर !!

हम तभी मनाये आज़ादी
जब सबको स्व अधिकार मिले
दूर गरीबी हो जन जन का
मुख मंडल पे मुस्कान खिले !!

यह समय है प्रगति पथ पे
चल के नूतन निर्माण करें
इतिहास के स्वर्ण अक्षर में
भारत माता का नाम भरें !!

शांति और सद्भावना का
हम ज्ञान जगत में फैलाएँ
अज्ञान का तमस मिटा कर
विश्व गुरु फिर कहलाएँ !!

मेरी कविता रोटियाँ नहीं दे सकती

– श्री. तेज नारायण राय, दुमका, झारखंड

यह बात सच है कि
मेरी कविता रोटियाँ नहीं दे सकती
किसी को
लेकिन यह भी सच है कि
किसी की रोटियाँ भी नहीं छीनती मेरी
कविता
न ही करती है
किसी की रोटियाँ छिनने के लिए प्रेरित

मेरी कविता
जो कभी किसी दिन
तुम्हारे दरवाजे पर दे दस्तक
तो पगली समझ कर भगा मत देना
उसे
न ही कर लेना घर का दरवाजा के
साथ-साथ दिल का दरवाजा बंद

बल्कि उसको देना सम्मान
दिल का दरवाजा खोल
अंदर बैठाना उसे
करना उससे जी भर बातचीत
वह इधर-उधर निहारेगी
पर उस पर करना नहीं संदेह
कोई जादू टोना नहीं करेगी वह बल्कि
दिखायेगी जीवन की सच्ची राह
बटायेगी तुम्हारे दुख में हाथ
हर लेगी मन की हर पीड़ा
और ले जाएगी हाथ पकड़
अंधेरे से उजाले की ओर...

इसलिए नफरत मत करना
मेरी कविता से
मत उड़ाना उसका मजाक
हो सके तो देना लोटा पानी
चटाई बिछाकर बिठाना उसे
पूछना उससे उसका हाल-चाल और
हो सके तो कभी-कभी गुनगुना लेना
मेरी कविता
और उसकी चंद पंक्तियों को

यह मानकर कि मेरी कविता
तुम्हें रोटियाँ तो नहीं दे सकती लेकिन
किसी की रोटियाँ भी नहीं छिनती मेरी
कविता
बल्कि रोटी छीननेवालों से
हिम्मत के साथ लड़ना सिखाती है
मेरी कविता !

पीड़ितों के पक्ष बोलती है
देती है पीड़ितों को साथ मेरी कविता !

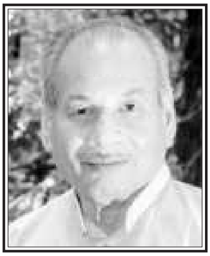

ॐ की महिमा, ॐ के लाभ

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

ॐ है ब्रह्माण्ड में तो ॐ कार है,
ॐ कार है तो जग का आकार है,
आकार है जग का जो साकार है,
ॐकार साकार एवं निराकार है ।

तीन अक्षरों अ, ऊ और म् से मिल,
बने ॐ में ईश्वर के तीन स्वरूप हैं,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश का मिले रूप हैं,
ॐ में सृजन पालन संहार शामिल हैं ।

ॐ के सही प्रयोग से जीवन की
हर समस्या दूर की जा सकती है,
ॐ के सही उच्चारण व जाप से
ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है ।

ॐ के जाप से शारीरिक और
मानसिक शक्ति प्राप्त होती है,
ॐ के जाप से मन व मस्तिष्क में
हमेशा शांति व स्थिरता आती है ।

ॐ के उच्चारण से सकारात्मक
ऊर्जा का मन में संचार होता है,
एकाग्रता नहीं प्राप्त कर पाते हैं,
तो आदित्य ॐकार लाभप्रद है ।

पीपल की छाँव

– श्री. गोपेंद्र कु सिंहा गौतम, औरंगाबाद, बिहार

हम अपने गाँव में
पीपल की छाँव में,
बैठकर खो जाते हैं
अतीत के पड़ाव में ।

पत्तों की खड़खड़
परिंदों की आहट,
याद दिला देती हैं
बचपन मुस्कुराहट ।

हवाओं की शरारत
डालियों का झूलना,
हमें सीखा जाती हैं
कैसे अपनों से मिलना ।

गिलहरियों की भाग दौड़
टिटहरियों की टर्र-टर्र,
आगाह कर जाते हैं
हमें भटकना है दर-दर ।

पत्तों से झाँकती किरणों
बूँद बूँद टपकती शबनम,
कहती हैं हमें, जिंदगी में
दो चीज खुशी और गम ।

हम अपने गाँव में
पीपल की छाँव में,
बैठकर खो जाते हैं
अतीत के पड़ाव में ।

आओ ! दीप जलाएँ

– श्री. अशोक आनन, शाजापुर, म.प्र.

धेरा बहुत घना है –
आओ !
दीप जलाएँ ।
घर घेरे में कोई न डूबा हो –
उजले घर के आँगन हों ।
घृणाओं से भरे न हों दिल –
उजले मन के दर्पण हों ।
वक़्त भी मौन सा है –
आओ !
गीत सुनाएँ ।
मन में अपनत्व के मेले हों –
गैरों की न दुनिया हो ।
तम के तमाशे, न खेले हों –
बाँहों भर ख़ुशियाँ हों ।
माथे पर गगन तना है –
आओ !
चाँद उगाएँ ।
घर दहलीज़ से न जुदा हों –
बंधन इनका अटूट हो ।
रुतें गुलशन पर फ़िदा हों –
प्यार इनमें अकूत हो ।
प्यार कोई न अब फ़ना हो –
आओ !
हाथ बढ़ाएँ ।
दीये-बाती के दिन फिर जाएँ –
तम उन्हें अपनाए ।
देहरी – देहरी हम दीये उजारें –
रोशनी के दिन आए ।
दीये जलाना कहाँ मना है –
आओ !
तमस मिटाएँ ।

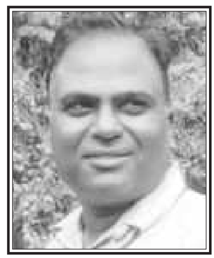

परिवार

– श्री. त्रिभुवन लाल साहू, जाँजगीर, छत्तीसगढ़

मेरा परिवार है सबसे प्यारा
सुख-दुख में जो बने सहारा ।

दादी सुनाए कहानी,
दादा बताएँ बातें पुरानी ।

माँ की गोदी सबसे प्यारी
उनकी डाँट भी हैं हितकारी ।

पापा जैसे छाँव घनेरी
मेहनत कर लाये खुशियाँ ढेरी ।

भाई-बहन में मस्ती भारी,
झगड़ा हो या हँसी हमारी।

साथ हमारे जब परिवार है,
जीवन सचमुच खुशगवार है ।

राजनीति और अंतरात्मा (व्यंग्य)

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

अंतरात्मा की आवाज सुनते हुए
वो महानुभव राजनीति में आ गया,
तोड़फोड़ दंगा फसाद कराकर
नव नेता जी सबके दिलों में छा गया,
इस तरह की राह चुनने के लिए भी
नव नेता जी को अंतरात्मा ने कहा था,
इस स्थान पर आने के लिए उसकी
अंतरात्मा ने पता नहीं क्या-क्या सहा था,
अपनों को छोड़ दुश्मनों से मिल जाने
दरअसल अंतरात्मा ने ही कहा कि
लोगों की अपनी ताकत बता देना,
विरोधियों को रास्ते से हटा देना,
चेहरे से तो दिखता था मुस्कुराना,
मगर दिखता नहीं था अंतस में गुर्राना,
घर परिवार तो उसका संयुक्त था,
मगर किसी को तज लाभ को अपना लेना
उनका सबसे बड़ा प्लस प्वाइंट था,
समय असमय झूठ बोलना,
किसी की मर्यादा-इज्जत को तोलना,
मर्यादित आचरण से होना जरूरी नहीं
बल्कि मर्यादित दिखना जरूरी था,
अंतरात्मा की बातों को मान
दिखावा सीखना जरूरी था,
बहुतों की गर्दन काट उत्तरोत्तर आगे
बढ़ते रहने के लिए
सिर्फ एक की इशारे को जाना,
राजनीति में सफल होने के लिए
नव नेता ने सिर्फ अंतरात्मा की आवाज को माना ।

गजल

मिलन के हम गीत गाते रहेंगे ॥

–श्री. शिवनाथ सिंह 'शिव',
रायबरेली, उ.प्र.

दिया दिल हैं तुझको,
निभाते रहेंगे ।
मोहब्बत के हम गीत
गाते रहेंगे ।। 1 ।।

करें क्यों अब परवाह
जमाने की हम फिर,
मिलन के सुर में,
नग्में सजाते रहेंगे ।। 2 ।।

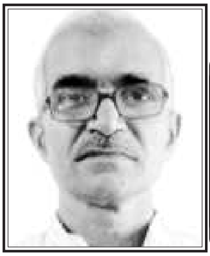

गीत

मैंने भी मोल खरीदे आँसू

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

मैंने भी मोल खरीदे आँसू
जब पीड़ा के बाजार में
पलकों पर उनको बैठाया
लिया जगत व्यवहार में

प्रतिपल बने दुखों के साथी
वह कष्ट उठाते रहे सदा
जग का दर्द बटोर रहे हैं
रात-रात भर जगे सदा

साधा स्वार्थ सभी ने अपना
उनका कोई हो न सका
इतने बने निरीह यहाँ वे
उन पर कोई रो न सका

छल प्रपंच ने शोषण करके
छोड़ दिया मझधार में
मैंने भी मोल खरीदे आँसू
जब पीड़ा के बाजार में

उसने खूब रुलाया इनको
ये जिन पर विश्वास किये
मार दुधारी अरमानों पर
कदम कदम प्रतिघात किया

ऐसा पाठ पढ़ाया जग ने
परछाई से भी डर लगता
इधर चलें या उधर चलें
कोई भी मार्ग नहीं मिलता

सबने जी भरकर है लूटा
कोई भी न बचा संसार में
मैंने भी मोल खरीदे आँसू
जब पीड़ा के बाजार में

त्योहार

हमारे पूर्वज, त्योहार अपने घर के लिए नहीं पूरे समाज के लिए ही मनाया करते थे । भरपेट खाने या बाह्य आडंबर का रूप दिखाने के लिए त्योहार मनाए नहीं गए । सामाजिक एकता और जीव-जंतुओं को खुश रखने के उद्देश्य से ही त्योहार मनाए गए । दिवाली हो या अन्य कोई भी त्योहार हमें सिर्फ अपने बारे में ही नहीं बल्कि दूसरों के बारे में भी सोचना चाहिए और जितना हो सके सबकी मदद करनी चाहिए ।

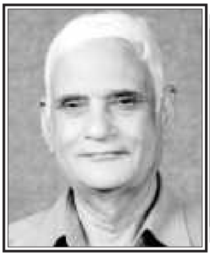

"लौहपुरुष" अखंड भारत के शिल्पी

– श्री. उमाकांत भारती,
भागलपुर, बिहार

स्वर्णाक्षरों में अंकित नाम,
जैसे हिमालय की चोटी पर अमिट ध्वजा ।
मां भारती का भाल,
पटेल के तेज से आलोकित ।

देश–हित में अडिग खड़े–
न सिंहासन की लालसा,
न मुकुट का मोह ।
उनकी ललाट–रेखा में बस
जन–कल्याण का अंकन था ।

रियासतों की शृंखलाएँ
जब राष्ट्र की राह में रोड़े बनीं,
तो लौहपुरुष की लौह–इच्छा
उन्हें मोम–सी पिघला गई ।
पाँच सौ से अधिक टुकड़े–
एक सूत्र में गूँथ दिए,
जैसे कोई माँ
बिखरे बच्चों को गोद में समेट ले ।

ताज अपने सिर न रखा,
नेहरू को सौंप दिया ।
त्याग का यह उदाहरण
वज्र से भी दृढ़,
गंगा से भी निर्मल ।

चाँद में दाग खोजने वाले,
राम–कृष्ण में भी खोट निकालनेवाले–
आज भी बहुत हैं ।
पर पटेल का चरित्र–
कोहिनूर सा उज्ज्वल,
निर्मल, निष्कलंक,
नयनप्रिय, नित्यनूतन ।

भारत–भूमि का लाल,
अखंड भारत का शिल्पी,
राष्ट्र–एकता का प्राणपुरुष ।
यदि प्रधानमंत्री पद न त्यागते,
तो भारत का स्वर विश्वगर्जना होता,
भारत का स्वर विश्वगुरु होता ।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

तुम और मैं प्रिये

– डॉ. रुरुकुमार महापात्र,
तिरुपति, आंध्र प्रदेश

तुम सुहाना सवेरा प्रिये
मैं अब तक जो सोया हूँ
तुम हो खिलता कमल प्रिये
जिसको मैं तो खोया हूँ ।। 1 ।।

तुम लहरों की मौज प्रिये
मै स्तब्ध सागर जल हूँ
तुम जो ईद की चाँद हो
में निहारता रोज हूँ ।। 2 ।।

तुम बातों की बरसात हो
मैं ध्यानगृह के मौन हूँ
तुम लक्ष्मी भी पार्वती हो
जानता नहीं मैं कौन हूँ ।। 3 ।।

तुम दूरदर्शन के चित्रहार हो
मैं कपिल शर्मा का शो प्रिये
तुम मौल की चकाचौंध जो
मैं टी कॉफी कॉफी ब्रेक प्रिये ।। 4 ।।

तुम रोहितजी का सिक्सर हो
मैं तो कुछ ऐसे रन प्रिये
तुम पेसर् क्लिन् बोल्ड बोलर्
मैं तो फिल्डर फिल्डिंग दूर प्रिये ।। 5 ।।

तुम महक्ता खिलता पुष्प शोभा
मैं तो दूर-दूर फल प्रिये
तुम मन्द मधुर मलय हो
मैं चञ्चल जीवन श्वास प्रिये ।। 6 ।।

तुम मादक मदिरासी प्यासों का
मैं रङ्गहीन जलधारा हूँ
तुम खास हो प्यास हो मर्दों का
मैं तो जीवन का ऐहसास भरूँ ।। 7 ।।

तुम रङ्ग हो रूप हो खेलसारा
मैं तो खेलका खेल दीवाना परा
तुम चित् हो जित जो उल्लासभरा
मैं लुटगया खेल मे दिल् जो हारा
मैं लुटगया खेल मे दिल् जो हारा ।। 8 ।।

मेरे आँगन का फूल

मेरे आँगन का फूल
बार-बार बुलाता है मुझे
खिलते चेहरे का प्रकाश
सिखाता रहता है मुझे
सोचो मेरे यार तुम भी
खिलता हुआ चेहरा वह
बहुत अच्छा लगता है
सामने जो भी आवे
वे भी खिल जाते हैं ।

संवेदना सूखे पत्तों की

– डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा',
भोपाल, म.प्र.

सूखे पत्ते
जिन्हें समझकर बे–जान
कर दिया किनारे
पत्ते वे बेजान नहीं
संवेदनाओं से लबरेज थे
देना चाहते थे जगह
उम्मीद से भरी नई कोंपलों को
ताकि वो भी जी सकें
जिंदगी अपनी
हमने उनकी अनदेखी करके
छोड़ दिया ठोकरों में उन्हें
अपनी पीड़ा को
खामोशी से सहते वे पत्ते
तब भी बने रहे संवेदनशील
और मिलकर मिट्टी में
बन खाद
देते रहे पोषण नई नस्लों को
ताकि हरियाया रहे पेड़ वह ।

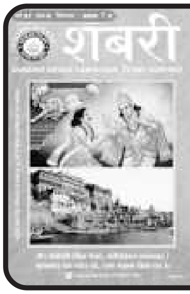

पाठकों के पत्र ...

दक्षिण भारत में हिन्दी के विकास के लिए आप जैसे लोग ही पावन माथे की विंदी हैं । आप और आपका परिवार सुखी और सानन्द रहे यही हमारी कामना है ।

सादर अभिवादन ।

– श्री. रविंद्र कुमार साहबदे, आरा, बिहार

बहुत बढ़िया । अब कोई भी माह की पत्रिका पढ़ सकते । आप लोगों का यह सराहनीय कार्य है । बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ आपको ।

– श्री. पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा',
नागपुर, महाराष्ट्र

बहुत ही सुंदर, मनहर, उत्कृष्ट और पठनीय अंक । शबरी का हर अंक कुछ न कुछ विशेषता लिए होता है । जिस तरह शबरी के झूठे बेर एक रामबाण औषधि बन गए थे, ठीक उसी तरह यह शबरी भी दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रति एक अलख और जनजागृति फैला रही है । संपादक मंडल बधाई का पात्र है । आज हिन्दी अपने चरमोत्कर्ष पर है उसमें शबरी का भी महत्वपूर्ण योगदान है ।

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

मैंने आज प्रातः, आपके द्वारा भेजी गई रोचक शबरी पत्रिका के पृष्ठ 29 तक पढ़ लिया है ।

शेष भी इसी प्रकार पढ़ लूँगा ।

उत्साही लेखन, विषयों में रोचक भिन्नता, पूरे राष्ट्र से लेखकों की सहभागिता, ने मुझे बहुत आनंदित किया ।

कृपया सभी को मेरी ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ अवश्य दें ।

सादर धन्यवाद

– श्री. राजु तोमर, गाजियाबाद, उ.प्र.

तमिलनाडु से अबाध रूप से समय पर प्रकाशित होनेवाली हिन्दी पत्रिका है 'शबरी' । श्रीधर जी, आपकी निष्ठा और प्रयास सराहनीय हैं । हार्दिक शुभकामनाएँ ।

– डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव,
हैदराबाद, तेलंगाना

हिन्दी भाषा के सम्मान और उत्थान में अति प्रशंसनीय कार्य ।

– श्री. ममता तिवारी 'ममता',
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

आप निरंतर नियमित रूप से प्रकाशित अंक कर रहे हैं । और वह भी बहुत कम शुल्क में । मेरी जानकारी में पूरे देश में आपकी ऐसी पत्रिका दूसरी नहीं निकल रही है । मैंने अंक के रचनाकारों को दे । सभी राज्यों को कवर करती है पत्रिका अच्छी बन पड़ी है । आपकी पूरी टीम को बधाई ।

– श्री. उमाकांत भारती, भागलपुर, बिहार

शबरी शिक्षा समाचार का सितंबर–2025 का अंक मिला । पढ़कर अति प्रसन्नता हुई । हिन्दी भाषा के लिए दक्षिण भारत से प्रचार प्रसार के लिए आपके प्रयत्न इस पत्रिका के माध्यम से बहुत ही सार्थक और सराहनीय हैं । मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें और इतने सुरुचिपूर्ण अंक के लिए हार्दिक बधाई ।

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

सुसज्जित उत्कृष्ट पत्रिका विषय वस्तु की विविधता के साथ साथ आकर्षक और मनोरंजक ई–पत्रिका बहुत बहुत बधाई । पत्रिका के अंतर्गत कतिपय प्रचार सामग्री भी अच्छी लगी । इससे इसका और अधिक आकर्षण बढ़ गया ।

– डॉ. ओम प्रकाश मिश्र 'मधुब्रत'

हिन्दी और साहित्य के क्षेत्र में सतत एवं सार्थक अवदान प्रदान करनेवाली हमारी शबरी पत्रिका और उसके प्रकाशन से संबद्ध सभी आदरणीय महानुभाव को सादर नमन सहित हार्दिक अभिनंदन और शबरी के सतत् उत्थान की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

– श्री. कैलाश चंद्र उपाध्याय, भोपाल, म.प्र.

आगे बढ़े

मानव को अपने आप पर विश्वास रखना चाहिए । जब कभी आदमी अपने काम और शब्दों पर विचार कर आगे बढ़ता है तब वह जरूर विजई बनता है । पराजय को पराजित ठहरने दीजिए । आप सदा विजय की और आगे बढ़ते रहिए । अपने मंजिल की ओर निरंतर प्रयास सहित जो आगे बढ़ता है वह सदा के लिए विजई ठहरता है ।

नवांकुर

पिता–पुत्री

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

हर बेटी का पहला हीरो उसके पिता होता है । वह अपने पिता के साथ होते समय सुरक्षित महसूस करती है । जब पूरी दुनिया ही उसके खिलाफ क्यों न हो जाए, तब भी उसके पिता उसके साथ खड़े रहेंगे और उसके साथ देंगे । एक पिता के लिए अपनी पुत्री एक मूल्य रत्न, खुशी और खजाना होती है । वह पिता अपनी माँ की छवि को अपनी पुत्री में महसूस करता है । उनके पुत्री को अपने पूरे जीवन प्यार के साथ पाल–पॉस्कर बड़ा करता है । एक पुत्री अपने पिता के लिए कुछ भी कर सकती हैं और एक पिता अपने पुत्री के लिए कुछ भी कर सकता है । यही उनका अनमोल रिश्ता है ।

लक्ष्य

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

लडका वह तोड रहा
बगीचे में एक लाल गुलाब
चोट लगी खून भी बही
काँटें लग गयी थी उसे ।

माँ डाँटने लगी जोर से
गुलाब पर हाथ लगाने
उस दिन छोड दिया
अगला दिन तोड लिया ।

मन ही मन सोचने लगा
जो किया सही ही किया
तरीका ही तब गलत था
जिसे अब सही कर लिया ।

लक्ष्य तक पहुँचने सदा
बुद्धि का प्रयोग करो
बल का भी प्रयोग करो
चतुराई से आगे बढो
तरीका बदल लो तुम
लक्ष्य उसे मत भूलो तुम ।

खुद पर जो भरोसा करता है
वही सर्वदा विजई ठहरता है ।

पानी का गिलास

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक दिन एक लड़का अपने अध्यापक से जाकर पूछने लगा...सर मैं हमेशा कहीं कड़ी मेहनत से पढ़ता हूँ, लेकिन मेरा मार्क्स ज़्यादा नहीं हो रही है। और सब मेरे तरफ देखकर हंस रहे हैं। अध्यापक धीरे से बोले...बस आराम करो अब इस गिलास के पानी लेकर, एक बार बाहर जाकर वापस आना और रात में सब पर ध्यान दो कि हर लोग तुम पर कैसे देख रहे है ? लड़का भी वैसे किया। जब वह वापस आया तो उससे अध्यापक ने पूछा कि, तुमने क्या देखा इस बार ? लड़का ने उत्तर दिया कि कुछ लोग ने मेरे तरफ देख हंसे, कुछ लोगों ने अजीब से देखे और कुछ लोग ने मुझे इग्नोर कर दिया। फिर अध्यापक ने गिलास में पूरा पानी डालकर उस लड़के को दिया और बताया कि इस बार एक बूँद को भी नीचे मत छोड़ना, ध्यान से जाकर वापस आना। वह लड़का वापस आया और उसे अध्यापक ने फिर से पूछा कि, इस बार तुमने क्या देखा ? उसे लड़का ने बताया कि, इस बार मैंने सिर्फ उसे गिलास पर ध्यान रखा और कहीं नहीं देखा ताकि मैं एक बूँद का पानी को भी नीचे ना छोड़ सके। हँसते हुए अध्यापक बोले, यह है मेरा जवाब। जब तुम दूसरों पर ध्यान दिया, तुमने गिलास से ज़्यादा पानी गिराया और जब ध्यान को उसे गिलास पर रखा, तुमने एक बूँद का पानी को भी नीचे ना छोड़ा। और यहाँ तुम इस गिलास की जगह ले रहे हो, जब तुम दूसरों पर ध्यान देते हो तो तब तुम अपना संभावना को छोड़ रहे हो जो तुझे अपनी सफलता से नीचे खींचती है। और हमेशा इस बात याद रखना कि, जब तुम अपने काम और चीज़ो पर ध्यान पूरा ध्यान रखकर प्यार करके करोगे, तब तुम अपने जिंदगी में ज़रूर सफल हो जाओगे। अपने आप पर यकीन रखो।

नवांकुर–रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए। खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें। रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितौ, अभिरुचितौ, अनूदितौ

1. देशः स्वयमेव पुनः स्वस्थः भविष्यति ।

केचन महाविद्यालयस्य छात्राः विनोबा भावेन सह मिलितुं आगतवन्तः । विनोबाजी तेभ्यः कानिचन कागदखण्डानि दत्त्वा एतानि खण्डानि उपयुज्य भारतस्य मानचित्रं निर्मातुम् आह ।

ते नक्शां निर्मितुं न शक्तवन्तः । एतत् सर्वं पश्यन् समीपे उपविष्टः एकः युवकः विनोबा इत्यस्मै पृष्टवान् यत् सः एतत् प्रयतितुं शक्नोति वा इति । विनोबा भावेन स्वीकृतम् । सः युवकः कतिपयेषु क्षणेषु एव तत् निर्मितवान् ।

''कथं भवता एतावत् शीघ्रं नक्शां निर्मातुं शक्यते ?'' पृष्टवान् विनोबा । ''एतेषां खण्डानां एकस्मिन् पार्श्वे भारतस्य मानचित्रम् आसीत्, अपरस्मिन् पार्श्वे मानवस्य आकृतिः आसीत् । मया मानवरूपं सम्यक् निर्मितम्, भारतस्य मानचित्रं च स्वयमेव परे प्रादुर्भूतम्'' इति युवकः प्रत्युवाच ।

विनोबा एवम् उक्तवान् ''तत्सत्यम् । यदि भवान् देशस्य निर्माणं कर्तुम् इच्छति तर्हि प्रथमं जनान् सम्यक् कर्तव्यम् । यदि जनाः सम्यक् सन्ति तर्हि देशः स्वयमेव सम्यक् भविष्यति ।''

2. समयपालनम्

सर चन्द्रशेखरवेङ्कटरामन भारतीय भौतिकशास्त्रज्ञः आसीत् । प्रकाशस्य आणविकप्रकीर्णनस्य घटनायाः रमनप्रभावस्य आविष्कारस्य कारणेन 1930 तमे वर्षे भौतिकशास्त्रस्य नोबेल् पुरस्कारं प्राप्तवान् । सः प्रथमः एशियादेशीयः प्रथमः अश्वेतवर्णीयः च आसीत् यः भौतिकशास्त्रस्य नोबेल् पुरस्कारं प्राप्तवान् ।

डॉ. सी.वी. रामन् महोदयस्य समयपालनं सर्वत्र प्रसिद्धम् आसीत् । सः कस्यचित् पुरतः शिरः न नतवान् ।

एकदा सर सी.वी. रामन कश्चन सभायां भाषणं कर्तुं आमन्त्रितः आसीत् । मैसूरुराज्यस्य अतीव उच्चपदस्थः एकः अधिकारी सभायाः अध्यक्षतायै आमन्त्रितः आसीत् । षड्वादने सभायाः आरम्भः निर्धारितः आसीत् । सर सी.वी. रामन दश निमिष पूर्वमेव आगतः । यः अध्यक्षतां कर्तुं निमंत्रितः आसीत् सः षट् वादन पर्यन्तं न आगतः । सभायाः आयोजकाः अधीराः आसन् । ते किञ्चित्कालं प्रतीक्षन्ते स्म ।

ततः सर सी वी रामन् महोदयः आसनात् उत्थाय अध्यक्षस्य रिक्तं आसंदं प्रति अवलोकयन् – ''अद्यापि दर्शनं न दत्त अध्यक्ष महोदय !'' इति स्वभाषणम् आरब्धवान् । कतिपयनिमेषेभ्यः अनन्तरं अध्यक्षः आगत्य निभृतम् आसंदे उपविष्टवान् । सः प्रचुरं स्वेदं कुर्वन् आसीत् ।

தமிழமுது – நிலையில் பிரியேல்

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

தோன்றின் புகழோடு தோன்றுக அஃதிலார்
தோன்றலின் தோன்றாமை நன்று

ஒரு செயலை செய்யத் தொடங்கும்போது அச்செயலை வெற்றிகரமாக முடித்துக் காட்டுவதுடன், முழுமையான பலனையும் பெறுபவரே, அந்த செயலில் தோன்ற வேண்டும், அல்லாதவர் அந்த செயலில் தோன்றக்கூடாது அல்லது ஈடுபடக் கூடாது என்று மிக அருமையாக நமக்கு வழிகாட்டி சென்றிருக்கிறார் தெய்வப்புலவர் திருவள்ளுவர். மனித வாழ்வு என்பது மாண்பு மிக்கது.

நம்முடைய வாழ்க்கையில் நாம் பல விஷயங்களை ஒவ்வொரு நாளும் கற்றுக் கொள்கிறோம். நம்முடைய அறிவு நம்முடைய தகுதியை வளர்த்துக்கொள்வதற்கு மிகவும் உதவி புரிகிறது. பள்ளிக்கல்வியில் பலவற்றைக் கற்றுக்கொள்ளும் மனிதன் கல்லூரி கல்வியில் மிக அதிகமான விஷயங்களை கற்றுக் கொள்கிறான். அனுபவம் அவனுக்கு பல புதிய விஷயங்களை ஒவ்வொரு நாளும் கற்றுத் தருகிறது. தன்னுடைய கல்வியாலும் அறிவாலும் ஒரு மனிதன் என்பவன் தன்னுடைய தகுதியை வளர்த்துக் கொள்கிறான்.

ஒருவனுடைய தகுதியே அவனுடைய பதவிக்கும், பண்புக்கும், இல்லத்திலும், சமூகத்திலும் அவனுடைய நிலையை தீர்மானிக்கிறது. தகுதியே உயர்வுக்கும் பெருமைக்கும் வழி வகுக்கிறது. தம்முடைய தகுதியை வளர்த்துக் கொள்கின்ற மனிதன் வாழ்வில் வளர்ந்து சிறக்கிறான். வாழ்வை வளமாக்க பற்பல விஷயங்களை நமக்கு எடுத்துக் கூறிச் சென்ற ஔவையார் **நிலையில் பிரியேல்** அதாவது உனக்குள்ள தகுதியை ஒருபோதும் விட்டுக் கொடுக்காதே என்று கூறுகிறார். நம்முடைய தகுதியை விட்டுக் கொடுத்து வாழ்வது நம்முடைய தன்மானத்தை விட்டு வாழ்வதற்கு சமம் எனவே ஒருபோதும் நாம் நம்முடைய தகுதியை விட்டு விலகக் கூடாது. ஔவையின் இவ்வரிகளை ஏற்போம், இனிமையான வாழ்வு பெறுவோம்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திரு அம்பர் பெருந்திருக்கோயில்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''சங்கணி குழையினர்
சாமம் பாடுவா
வெங்கனல் கனல் தர
வீசி யாடுவா
அங்கணி விழவமர்
அம்பர் மாநகர்ச்
செங்கன்நல் இறைசெய்த
கோயில் சேர்வரே.''

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் அருளிய
3-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

அம்பல், அம்பர் என்று தற்போது அழைக்கப்படும் திரு அம்பர் பெருந்திருக்கோயிலானது மாகாளபுரம், மாகாளிபுரம், அம்பகரத்தூர், பிரம்மபுரி, நந்தராஜபுரம், சம்பகாரண்யம், மாரபுரி எனப் பலப்பல பெயர்களால் சிறப்பிக்கப்படும் பெருமைக்கு உரியதாகும். இந்த திருத்தலம் காவிரிநதியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவாரப் பாடல் பெற்ற தலங்களுள் 54-ஆவது அருட்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் நைமிசாரண்யத்தில் சௌனகர் முதலான ரிஷிகள் புராணங்கள் அனைத்தையும் அறிந்தவரும், அவற்றை அனைவருக்கும் அழகுற எடுத்துரைத்தவருமான சூத முனிவரிடம் எல்லாவிதமானப் பெருமைகளை உடைவதும், வேண்டுபவர்களின் விருப்பங்கள் அனைத்தையும் நிறைவேற்றக்கூடியதும், முத்திதரும் அருளாற்றல் மிக்கதுமான ஒரு திருத்தலத்தை எங்களுக்குக் காண்பித்து அருளுங்கள் என வேண்டினர்.

சூத முனிவரும் தலைக்குமேல் இருகரங்களையும் கூப்பி வணங்கி, கண்களில் ஆனந்தக் கண்ணீர் பெருக இத்தலத்தின்

சிறப்புகளைக் கூறலானார்...

இந்தத்தலத்தின் சிறப்புக்களை சிவபெருமானால் மட்டுமே முழுமையாக விளக்க இயலும்.

வேண்டுபவர்களுக்கு வேண்டியதை எல்லாம் தரவல்ல கற்பக விருக்ஷம், காமதேனு, சிந்தாமணி போன்ற பெருமையுடையது இந்தத்தலம். இந்தத்தலத்தில் சிறிது நேரத் தங்கினால்கூட காசி மாநகரில் தானதர்மம் செய்த பலன் கிடைக்கும். இந்த ஊரில் பிறந்த அனைவருக்கும் சிவலோக பதவி நிச்சயம் கிடைக்கும். அன்னமாம் பொய்கையில் நீராடி அரனாரை வழிபடுபர்கள் அனைத்துவிதமான பாவங்களில் இருந்தும் விடுபடுவர் என அம்பர் பெருந்திருக்கோயிலுக்கு பெருமைகளை விரிவாக விளக்கினார்.

அன்னமாம் பொய்கை :

முன்னொரு காலத்தில் பிரம்மாவும், திருமாலும் தங்களுக்குள் யார் பெரியவர் என்பதை முடிவு செய்வதற்காகத் திருமால் வராஹ (பன்றி) வடிவம் ஏற்று அடிமுடிகாணாது நெடிது வளர்ந்த சிவபெருமானின் திருவடியைத் தேடி பூமியை அகழ்ந்துகொண்டே போனார். பிரம்ம அன்னப்பறவை வடிவில் சிவனாரின் திருமுடிதேவி மேலே மேலே பறந்தார்.

ஒரு காலக்கட்டத்தில் வராஹ வடிவில் பூமியைத் தோண்டிக் கொண்டே சென்ற திருமால் தம்மால் அவரது திருவடியைக் காண இயலவில்லை என உருவிற்கு வந்தார். ஆனால் கர்வம் கொண்ட பிரம்மாவோ சிவனாரின் தலையில் இருந்து கீழ்நோக்கி விழுந்த தாழம்பூவின் பொய்சாட்சி மூலம் தாம் சர்வேஷ்வரனின் திருமுடியைத் தரிசித்ததாக அறிவித்தார்.

இவ்வாறு பொய்கூறிய தாழம்பூ சிவபூஜைக்கு ஆகாது எனவும், பொய்கூறிய பிரம்மன் அன்னவடிவிலேயே அலையட்டும் என்றும் ஜகதீஷ்வரன் சாபமிட்டார்.

தவறை உணர்ந்த பிரம்மன் புன்னை மரங்கள் நிறைந்த இத்தலம் வந்து திருக்கோயில் உள்ளே ஒருகிணறு அமைத்துத் தினமும் அரிசிலாற்றில் நீராடி தாம் அமைத்த கிணற்றில் நீர் எடுத்து சிவனாருக்கு அபிஷேகம் செய்து தினமும் அவரையே நினைத்துத் தவம் செய்து சுயவடிவம் பெற்றார். பிரம்மாவால் உருவாக்கப்பட்டதால் இக்கிணறு அன்னமாம் பொய்கை என வழங்கப்படுகிறது.

அம்பகரத்தூர் :

முன்னொரு சமயம் துர்வாச முனிவருக்கும் மதலோலா என்ற தேவகன்னிகைக்கும் அம்பன், அம்பரன் என்ற இருமகன்கள் பிறந்தனர். இவ்விருவரும் கடுமையான தவம் செய்து அளவற்ற ஆற்றல் பெற்று, அகிலத்தவரை அதிகம் துன்புறுத்தினர்.

இவ்விருவரின் தொல்லைகள் எல்லைமீறிப்போகவே சிவபெருமான் அம்பிகை மூலம் அவரது அம்சமான காளியை வரவழைக்கச் செய்தார். அவரிடம் அம்பன், அம்பரன் இருவரையும் அழித்துவர ஆணையிட்டார்.

காளிதேவி அழகிய இளம்பெண் வடிவிலும், திருமால் வயோதிக அந்தணர் வடிவிலும் அம்பன், அம்பரன் அரண்மனை சென்றனர். காளியின் அழகில் மயங்கிய அவ்விருவருமே அவரை மணக்கவிரும்பினர்.

வயோதிக வடிவில் வந்துள்ள திருமால் தாங்கள் இருவரும் போரிடுங்கள். அதில் ஜெயிப்பவரை இவள் மணப்பாள் என்றாள். அறிவிழந்த இருவரும் உடனே போர் செய்தனர். போரில் அம்பரன் அம்பனைக் கொன்று தன்னை மணக்கும்படி கூற, காளிதேவியோ தமது சுயவடிவம் ஏற்று அம்பரனைக் கொன்றார். அனைவரும் மகிழ்ந்தனர். காளிதேவியானவர் அம்பரனைக் கொன்ற இடம் என்ற பொருளில் இத்திருத்தலம் அம்பரகத்தூர் எனவும் வழங்கப்பட்டது.

சிறப்புக்கள் :

1. தேவர்களைத் துன்புறுத்திய ழலத்திய வம்சத்து அசுரனான சம்ஹார சிலனை ஈசன் வதம் செய்ததும் இந்தப் புன்னாக வனத்தில்தான்.
2. காசிமாநகரைச் சேர்ந்த விமலன் என்ற அந்தணன் ஈசன் அருளால் புத்ரபாக்யம் பெற்று நன்றிக்கடனாய் ஈசருக்குக் கைங்கர்யம் செய்ததலமும் இந்த அம்பர் பெருந்திருக்கோயில் ஆகும்.
3. பிரம்மதேவன் வழிகாட்டுதல்படி மன்மதன் தமக்கு ரிஷிகள் அளித்த சாபம் நீங்கப்பெற்ற சிறப்புக்குரியதும் இந்தத் தலமே ஆகும்.
4. காம்போஜ தேசத்து அரசன் நந்தன் பிரம்மஹத்தி தோஷம் நீங்கப்பெற்றதும் அம்பலே.
5. பஞ்சகாலத்தில் இறைவன் விநாயகப் பெருமான் மூலம் படிக்காசு அருளி மக்கள் பசிப்பிணி தீர்த்த தலம்.

6. உடலால் வேறுபட்டாலும் உள்ளே ஒளிரும் ஆத்மாவால் அனைவரும் ஒன்றே என வாழ்ந்துகாட்டிய ஸ்ரீ சோமாசிமாற நாயனார் திரு அவதாரத்தலமாகவும் இந்த திவ்ய திருப்பதி திகழ்கின்றது.
7. கோட்செங்கட் சோழன் கட்டுவித்த மாடக்கோயில்களுள் இதுவும் ஒன்று ஆகும்.
8. ராஜராஜ சோழன் மற்றும் மூன்றாம் குலோத்துங்க சோழன் ஆகியோரது நான்கு கல்வெட்டுக்கள் இத்திருக்கோயிலில் காணக்கிடைக்கின்றது.
9. சங்க இலக்கியங்களான புறநானூறு, நற்றினை, திவாகர நிகண்டு முதலானவற்றிலும் இந்தத்தலம் பற்றிய குறிப்புகள் வருகின்றன.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி – ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ பிரம்மபுரீஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ அம்பரீஷர் (எ) ஸ்ரீமாரபுரீஷ்வரர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ சுகந்தகுந்தளாம்பிகை (எ) ஸ்ரீ பூங்குழலம்மை
தீர்த்தம்	:	பிரம்மதீர்த்தம், அரிசிலாறு, அன்னமாம் பொய்கை, இந்திர தீர்த்தம், சூல தீர்த்தம்
தலமரம்	:	புன்னை மரம், மருத மரம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	பிரம்மா, இந்திரன், காளிதேவி, மன்மதன், விமலன், நந்தன் முதலானோர்

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் இத்தலத்து இறைவனை பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளார். மஹாவித்வான் மீனாக்ஷி சுந்தரம்பிள்ளை இத்திருத்தலத்தின் தலபுராணம் எழுதியுள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி – பகல் 11.00 மணி வரை
மாலை 04.30 மணி – இரவு 08.30 மணி வரை

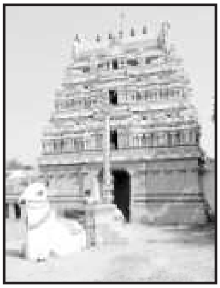

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ பிரம்மபுரீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
அம்பல் – 609 503.
பூந்தோட்டம் (வழி), நன்னிலம் வட்டம்,
நாகப்பட்டிணம் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் : 04366-238973

அமைவிடம் :

அம்பல் என்று தற்போது மக்கள் வழக்கில் உள்ள அம்பர் பெருந்திருக்கோயிலானது மயிலாடுதுறை திருவாரூர் சாலையில் உள்ள பூந்தோட்டம் என்ற ஊரில் இருந்து சுமார் 3 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ சுகந்தகுந்தளாம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ பிரம்மபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.10.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

PRAVEEN POORVARDH

Just ₹390/- Only

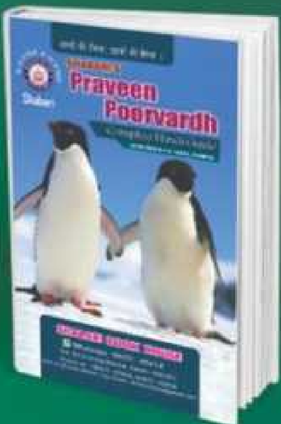

- Planned and perfect presentation.
- Impressive and easy language.
- Presents the Language in its own way.
- Perfect companion for Students.
- Prefer Shabari Guides.
- Feel the difference.
- Finest way to pass the exams with confidence.

LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just ₹420.00 Only

35,000 Words

Hindi - Hindi - English - Tamil

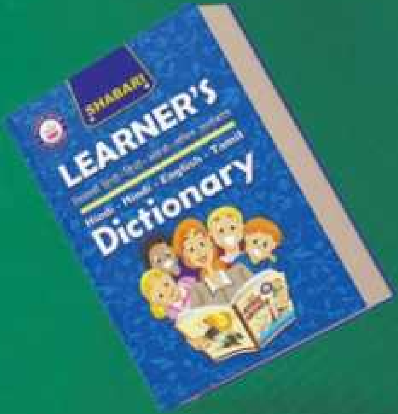

மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.
தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

Posted at Salem HPO 636 001. October - 2025

Published on 5th October - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

Please quote your subscription number in all correspondance.

To

If undelivered please return to

Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Learner's Choice

தமிழ் ஓவியம்

அழகாய் பழகுவோம் அமுதத் தமிழை

இயல்பாய் கற்போம் இன்பத் தமிழை

சபரியுடன் கற்போம் சரியாய் கற்போம்

அன்புடன் கற்போம் அழகுத் தமிழ்.

Learning Tamil becomes fun and exciting
Learning becomes easy and ever interesting
Tamil Oviyam teaches tamil words fascinating
tamil Oviyam takes to the world of perfect learning

PreKG - Rs. 45.00 **LKG & UKG - Rs. 90.00**